ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला
हिन्दी ग्रन्थाङ्क—११५

आस्कर वाइल्डकी कहानियाँ

आजसे १३ वर्ष पहले, साहित्य-क्षेत्रमें

डरते-डरते प्रवेश करनेवाले,

किशोर लेखक भगीरथ

की ओरसे

उसके प्रथम प्रोत्साहक, मित्र और प्रकाशक

राजा मुनुआको स्नेह और आदरसे

०

आस्कर वाइल्डकी कहानियाँ

धर्मवीर भारती
द्वारा
अनूदित

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

भारतीय लोकोदय ग्रन्थमाला
सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

द्वितीयावृत्ति
१९६०
मूल्य ढाई रुपये

प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

•

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

आस्करवाइल्ड अंग्रेजी साहित्यके उन थोड़ेमें लेखकोंमेंसे एक है जिसका लेखन जितना विवादास्पद रहा है, उतना ही उसका व्यक्तित्व भी। किन्तु अंग्रेजी गद्यके अनुपम शैलीकारके रूपमें उसे सभीने मान्यता दी है! शिल्पसज्जा, शब्दचयन, चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति और भाषा-प्रवाहके लिए आज भी उसका लेखन अद्वितीय माना जाता है। उसकी कथाएँ अपने ढंगकी अनूठी हैं। आशा है ये हिन्दीके पाठकोंको रुचिकर प्रतीत होंगी।

—अनुवादक

"कैवेलरीके पहाड़ोंपर प्रभु जीससको फाँसी दी गई थी। जब जोज़ेफ़ उसकी फाँसी देखकर शामको नीचे घाटीमें आया तो उसने एक सफ़ेद चट्टानपर एक जवान आदमीको बैठ कर रोते हुए देखा।

और जोज़ेफ़ उसके पास गया और बोला—"मैं जानता हूँ तुझे कितना दुःख हो रहा है क्योंकि सचमुच जीसस बड़ा महान् पैग़म्बर था।"

लेकिन उस जवान आदमीने कहा—"ओह मैं उसके लिए नहीं रो रहा हूँ। मैं इसलिए रो रहा हूँ कि मुझे भी जादू आता है, मैंने भी अन्धोंको आँखें दी हैं, मुर्दोंको जीवन दिया है, भूखोंको रोटी दी है, पानीको शराब बनाया है....और फिर भी मानव-जातिने मुझे क्रासपर नहीं लटकाया।"

—'आस्कर वाइल्ड'

सूची

शिशु-देवता

पृ० १३

अभिषेक

पृ० २१

तारा-शिशु

पृ० ३९

मूर्ति और मनुष्य

पृ० ५९

निःस्वार्थ मित्रता

पृ० ७३

इन्फैण्टाका जन्मदिन

पृ० ८७

एक लाल गुलाबकी क़ीमत

पृ० १०७

मालिक और उसका अन्तःकरण

पृ० ११७

शिशु-देवता

शिशु-देवता

स्कूलसे लौटते समय रोज शामको बच्चे उस जादूगरके बागमें जाकर खेला करते थे।

बड़ा सुन्दर बाग था, मखमली घासवाला! घासमें यहाँ-वहाँ तारोंकी तरह रंगीन फूल जड़े थे और उसमें बारह नारंगीके पेड़ थे जिनमें वसन्तमें मोतिया किसलय लगते थे और पतझड़में रसदार फल। डालोंपर बैठकर चिड़ियाँ इतने मीठे स्वरोंमें गाती थी कि बच्चे खेल रोककर उन्हें सुनने लगते थे।

एक दिन जादूगर विदेशसे लौट आया। वह अपने मित्रको देखने गया था और वहाँ सात वर्ष तक रुक गया था। सात साल तक बातें करते रहनेके बाद उसकी बातें समाप्त हो गईं (क्योंकि उसे थोड़ी-सी बातें करनी थी) और वह अपने घरको लौट आया। जब वह आया तो उसने बागमें बच्चोंको ऊधम मचाते हुए देखा।

"ऐं! तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने गुर्राकर पूछा। लड़के डरकर भाग गये।

"मेरा बाग मेरा खुदका बाग है! कोई भी नासमझ इसे समझ सकता है?" इसलिए उसने उसके चारों ओर ऊँची-सी दीवार खिंचवाई और फाटकपर एक तख्ती लटका दी जिसपर लिखा था—"आम रास्ता नहीं है!"

अब बेचारे बच्चोंके खेलनेके लिए कोई जगह नहीं रह गई। वे सड़कपर खेलने लगे मगर सड़कपर नुकीले पत्थर गड़ते थे अतएव जब उनकी

छुट्टी हो जाती थी तो वे उस ऊँची दीवारके चारों ओर घूमकर

उसके बाद वसन्त आया और सभी बागोंमें छोटी-छोटी चि[illegible]
कने लगीं और नये किसलय फूलने लगे। मगर उस जादूगरके ब[illegible]
भी शिशिर ऋतु थी। उसमें कोई बच्चे न थे इसलिए चिड़ियां
उत्सुक न थीं और पेड़ फूलना भूल गये थे।

एक बार एक फूलने घासमें सर निकालकर ऊपर झांका,
उसने वह तख्ती देखी तो उसे इतना दुःख हुआ कि वह सुबकते
रोता हुआ फिर जमीनमें सोने चला गया।

हां, हिम और पाला बेहद खुश थे—"वसन्त शायद इस [illegible]
गया है—अब हम साल भर यहीं रहेंगे।" उन्होंने उत्तरी ध्रु[illegible]
आँधीको भी आमन्त्रित किया और वह भी वहीं आ गई।

"वाह कैसी अच्छी जगह है" आंधीने कहा—"यहां ओलोंको
लिया जाय तो कैसा हो!" और ओले भी आ गये।

"मालूम नहीं अभी तक वसन्त क्यों नहीं आया?" स्वार्थ[illegible]
सोचा—उसने खिड़कीमें बैठकर ठण्डे सफ़ेद बागकी ओर देखा
मौसम बदलना चाहिए!"

लेकिन वसन्त नहीं आया और न ग्रीष्म—पतझड़में हर
फल झूलने लगे—मगर जादूगरके बाग़में डालें खाली थीं।

"वह बड़ा स्वार्थी है" पतझड़ने कहा—और वहां सदा शि[illegible]
और आँधी, हिम और ओलेके साथ कोहरा बराबर छाया रहा।

एक दिन सुबह जब जादूगर आया तो उसे बड़ा आकर्षक
पड़ा। इतना मीठा था वह स्वर कि उसने समझा राजाके
गाते हुए निकल रहे हैं। किन्तु वास्तवमें उसकी खिड़कीके पास
डालपर बैठकर एक चिड़िया गीत गा रही थी। किसी भी विहग

को सुने उसे इतने दिन बीत गये थे कि वह उसे स्वर्गीय संगीत समझ रहा था। उस वक्त वर्फ रुक गया था, आसमान खुल गया था, तूफ़ान सो गया था। और खुले हुए वातायनसे सौरभकी लहरें उसे चूम जाती थीं।

"मैं समझता हूँ वसन्त आ गया", जादूगरने कहा और बिस्तरसे उछल कर बाहर झाँकने लगा।

उसने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा—दीवाल के एक छोटे-से छेदमेंसे बच्चे भीतर घुस आये हैं और पेड़की शाखोंपर बैठ गये हैं। पेड़ बच्चोंका स्वागत करनेमें इतने खुश थे कि वे फूलोंसे लद गये थे और लहराने लगे थे। चिड़ियाँ खुशीसे फुदक-फुदककर गीत गा रही थीं और फूल घासमें-से झाँककर हँस रहे थे।

किन्तु फिर भी एक कोनेमें अभी शिशिर था। वहाँ एक बहुत छोटा बच्चा खड़ा था। वह इतना छोटा था कि डाल तक नहीं पहुँच पाता था—अतः वह रोता हुआ घूम रहा था। पेड़ बर्फसे ढँका था और उसपर उत्तरी हवा बह रही थी। "प्यारे बच्चे चढ़ आओ!" पेड़ने कहा और डालें झुका दीं मगर वह बच्चा बहुत छोटा था।

वह दृश्य देखकर जादूगरका दिल पिघल गया। "मैं कितना स्वार्थी था!" उसने सोचा, "यह कारण था कि अभी तक मेरे बागमें वसन्त नहीं आया था? मैं उस बच्चेको पेड़पर चढ़ा दूँगा, यह दीवाल तुड़वा दूँगा और तब मेरा उपवन हमेशाके लिए शैशवकी क्रीड़ा-भूमि बन जायगा!"

वह नीचे उतरा और दरवाज़ा खोलकर बागमें गया। जब बच्चोंने उसे देखा तो वे डरकर भागे और बागमें फिर जाड़ा आ गया। मगर उस छोटे बच्चेकी आँखोंमें आँसू भरे थे और वह जादूगरका आगमन नहीं देख सका। जादूगर चुपचाप पीछेसे गया और उसने धीरेसे उसे उठाकर पेड़पर बिठा दिया। पेड़में फ़ौरन कलियाँ फूट निकलीं और चिड़ियाँ लौट आईं और गाने लगीं। छोटे बच्चेने अपनी नन्हीं बाहें फैलाकर जादूगरको चूम लिया। दूसरे बच्चोंने भी यह देखा और जब उन्होंने देखा कि जादूगर

छुट्टी हो जाती थी तो वे उस ऊँची दीवारके चारों ओर चक्कर लगाते थे।

उसके वाद वसन्त आया और सभी वाग़ोंमें छोटी-छोटी चिड़ियाँ चहकने लगीं और नये किसलय फूलने लगे। मगर इस जादूगरके वाग़में अव भी शिशिर ऋतु थी। उसमें कोई वच्चे न थे इसलिए चिड़ियाँ गानेकी इच्छुक न थीं और पेड़ फूलना भूल गये थे।

एक वार एक फूलने घाससे सर निकालकर ऊपर झाँका, किन्तु जव उसने वह तख़्ती देखी तो उसे इतना दुःख हुआ कि वह शवनमके आँसुओंसे रोता हुआ फिर ज़मीनमें सोने चला गया।

हाँ, हिम और पाला वेहद ख़ुश थे—"वसन्त शायद इस वाग़को भूल गया है—अव हम साल भर यहीं रहेंगे।" उन्होंने उत्तरी ध्रुवकी वर्फ़ीली आँधीको भी आमन्त्रित किया और वह भी वहीं आ गई।

"वाह कैसी अच्छी जगह है" आँधीने कहा—"यहाँ ओलोंको भी वुला लिया जाय तो कैसा हो!" और ओले भी आ गये।

"मालूम नहीं अभी तक वसन्त क्यों नहीं आया?" स्वार्थी जादूगरने सोचा—उसने खिड़कीमें बैठकर ठण्डे सफ़ेद वाग़की ओर देखा—"अव तो मौसम वदलना चाहिए!"

लेकिन वसन्त नहीं आया और न ग्रीष्म—पतझड़में हर वाग़में सुनहले फल झूलने लगे—मगर जादूगरके वाग़में डालें खाली थीं।

"वह वड़ा स्वार्थी है" पतझड़ने कहा—और वहाँ सदा शिशिर रहा—और आँधी, हिम और ओलेके साथ कोहरा वरावर छाया रहा।

एक दिन सुवह जव जादूगर आया तो उसे वड़ा आकर्षक संगीत सुन पड़ा। इतना मीठा था वह स्वर कि उसने समझा राजाके चारण इधरसे गाते हुए निकल रहे हैं। किन्तु वास्तवमें उसकी खिड़कीके पास एक वृक्षकी डालपर वैठकर एक चिड़िया गीत गा रही थी। किसी भी विहगके कलरव-

को मुने उसे इतने दिन बीत गये थे कि वह उसे स्वर्गीय संगीत समझ रहा था। उस वक्त वर्फ रुक गया था, आसमान खुल गया था, तूफान सो गया था। और खुले हुए वातायनसे सौरभकी लहरें उसे चूम जाती थी।

"मैं समझता हूँ वसन्त आ गया", जादूगरने कहा और विस्तरसे उछल कर बाहर झाँकने लगा।

उसने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा—दीवाल के एक छोटे-से छेदमेंसे बच्चे भीतर घुस आये हैं और पेडकी शाखोंपर बैठ गये हैं। पेड बच्चोंका स्वागत करतेमें इतने खुश थे कि वे फूलोंसे लद गये थे और लहराने लगे थे! चिड़ियाँ खुशीसे फुदक-फुदककर गीत गा रही थी और फूल घासमें-से झाँककर हँस रहे थे।

किन्तु फिर भी एक कोनेमें अभी शिशिर था। वहाँ एक बहुत छोटा बच्चा खडा था। वह इतना छोटा था कि डाल तक नही पहुँच पाता था—अत वह रोता हुआ घूम रहा था। पेड बर्फसे ढँका था और उसपर उत्तरी हवा बह रही थी। "प्यारे बच्चे चढ आओ!" पेडने कहा और डालें झुका दी मगर वह बच्चा बहुत छोटा था।

वह दृश्य देखकर जादूगरका दिल पिघल गया। "मैं कितना स्वार्थी था!" उसने सोचा, "यह कारण था कि अभी तक मेरे बागमें बसन्त नही आया था? मैं उस बच्चेको पेडपर चढा दूँगा, यह दीवाल तुडवा दूँगा और तब मेरा उपवन हमेशाके लिए शैशवकी क्रीडा-भूमि बन जायगा।"

वह नीचे उतरा और दरवाजा खोलकर बागमें गया। जब बच्चोंने उसे देखा तो वे डरकर भागे और बागमें फिर जाडा आ गया। मगर उस छोटे बच्चेकी आँखोंमें आँसू भरे थे और वह जादूगरका आगमन नही देख सका। जादूगर चुपचाप पीछेसे गया और उसने धीरेसे उसे उठाकर पेडपर बिठा दिया। पेडमें फौरन कलियाँ फूट निकली और चिड़ियाँ लौट आई और गाने लगी। छोटे बच्चेने अपनी नन्ही बाहें फैलाकर जादूगरको चूम लिया। दूसरे बच्चोंने भी यह देखा और जब उन्होंने देखा कि जादूगर

"किसने यह दुस्साहस किया है ? बताओ मैं उसे अभी इसका मजा चखाता हूँ !"

"नहीं !" बच्चेने कहा—"ये तो प्रेमके घाव हैं !"

जादूगर स्तब्ध हो गया ।

"कौन हो तुम ?" उसने भयमिश्रित श्रद्धासे पूछा । बच्चा हँसा और बोला—"तुमने एक बार मुझे अपने बागमें खेलने दिया था । आज तुम मेरे बागमें चलो—वह बाग जिसे लोग स्वर्ग कहते हैं ।"

आज जब दोपहरको बच्चे आये तो उन्होंने देखा कि उस पेड़के नीचे सफेद फूलोंकी चादर ओढ़े बूढ़ा जादूगर अनन्त निद्रामें निमग्न है ।

६०१७

अभिषेक

दूसरे दिन प्रात काल उसका राज्याभिषेक होने वाला था, और तरुण युवराज अपने शुयनागारमें अकेले बैठा था। भूमि तक सर झुका कर वन्दन कर उसके दरबारियोंने उससे विदा माँग ली थी और महलके मुख्य बहिःप्रकोष्ठमें चले गये थे। वहाँ अभिषेकाचार्य उन्हें उत्सवकी रीति समझा रहा था, क्योंकि उनमेंसे कुछ अब भी साधारण स्वाभाविक व्यवहारके अभ्यस्त होनेके कारण दरबारी आडम्बर न सीख पाये थे। किन्तु स्वाभाविकता दरबारमें अपराध गिना जाता है।

युवराज—जो अभी केवल सोलह वर्षका किशोर था, उनके जानेपर तनिक भी अप्रसन्न नही हुआ और छुटकारेकी एक लम्बी साँस लेकर अपने जड़ाऊ पलंगके रेशमी गद्देपर लेट गया और आजादीके लिए बेक़रार निगाहोंसे चारों ओर देखने लगा जैसे कोई कुंजोंका स्वच्छन्द पक्षी, या जालमें नया फँसा हुआ कोई आज़ाद जंगली जानवर।

सच तो यह है कि उसे भी शिकारी जालमें फँसा लाये थे। वह खुले बदन हाथमें बाँसुरी लेकर गड़रियोंके झुण्डके साथ जा रहा था। वह बचपनसे उन्हींके बीचमें पला था और अपनेको भी गड़रिया समझता था। किन्तु वास्तवमें वह एक राजकुमारीकी सन्तान था। वह अपने पिताकी अकेली पुत्री थी और उसने अपनेसे बहुत निम्न श्रेणीके किसी व्यक्तिसे गान्धर्व विवाह किया था। कुछका कहना था कि एक अजनबीने जादू भरी बाँसुरीके रजत स्वरोंसे राजकुमारीकी चेतनापर मोहिनीका जाल बुन दिया था; कुछका कहना था कि रिमिनीके किसी कलाकारके प्रति राजकुमारीने

[illegible] आरंभ प्रदर्शित किया था और जो अधूरा मन्दिर निर्माण की; [illegible] था। जब कुमार [illegible] नाम [illegible] था, तभी [illegible] [illegible] साधारण किसान दम्पतिको सौंप दिया था, जो स्वयम् निम्न- [illegible] रहते थे। [illegible] या महामारी, [illegible] मिले हुए इटालियन [illegible] [illegible] सुन्दर और [illegible] [illegible] [illegible] सुन्दर किसान दम्पतिका [illegible] [illegible] बहुत सुन्दर [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जिसका नाम "सुखभागार" था और जिसका वह एकच्छत्र स्वामी था, उसे एक सर्वथा नवीन संसार-सा मालूम होता था। ज्योंही उसे दरबार *या मन्त्रणा-गृहसे छुटकारा मिलता था, वह आनन्दमें रजत-सोपानोंपर* संचरण करता था। प्रकोष्ठसे प्रकोष्ठमें वह घूमता था जैसे वह सौन्दर्यमें दुःख और दुर्बलताका प्रतिकार ढूँढ रहा हो।

वह इनको आविष्कारकी यात्राएँ समझता था और वास्तवमें उसके लिए ये जादूके देशकी स्वप्निल यात्राएँ थीं। कभी-कभी उसके साथ घुन-हली अलकोंवाले कृश बालभृत्य रहते थे जिनके उत्तरीय लहराते थे और वालमें बँधे हुए रेशमी तन्तु खुल-खुल पड़ते थे। किन्तु अधिकतर वह एकान्तमें ही रहता था क्योंकि उसने न जाने किस दैवी प्रेरणासे यह समझ लिया था कि कलाके गूढ़तम सत्य केवल एकान्तमें ही मिलते हैं और ज्ञान-की भाँति सौन्दर्य भी एकान्त पूजासे प्रसन्न होता है।

उसके विषयमें उन दिनों विचित्र कहानियाँ कही जाती थीं। कहा जाता है कि नागरिकोंकी ओरसे उसे अभिनन्दन देनेके लिए आनेवाले प्रबन्धाध्यक्षने देखा कि वह एक बड़ेसे चित्रके सामने झुककर उसकी पूजा कर रहा है। वह चित्र वेनिससे आया था और उसमें किसी नवीन देवता-की पूजाका रेखाङ्कन है। एक बार वह कई घण्टोंके लिए खो गया और *बहुत लम्बी खोजके बाद वह महलकी उत्तरी मीनारमें मिला जहाँ वह एक* बड़े-से ग्रीक हीरेको अपलक देख रहा था जिसपर कामदेवका चित्र खुदा *हुआ था। कहा जाता है कि एक दिन वह संगमरमरकी प्रतिमाके अधरों-*की चूमते हुए देखा गया जो सन्तरिणीके निर्माणके समय सरिता तटपर पाई गई थी। कहते हैं एक समूची पूनोंकी रात उसने एक रजत प्रतिमापर किरण रेखाएँ देखनेमें बिता दी।

सभी मूल्यवान् और दुर्लभ वस्तुओंमें उसे एक विचित्र आकर्षण मालूम देता था। उन्हें मँगवानेकी उत्सुकतामें बहुतसे सौदागरोंको विदेशोंमें भेजा था। कुछ कस्तूरीकी खोजमें उत्तरी समुद्रके मल्लाहोंके पास गये, कुछ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] प्रतिमा [illegible] एक [illegible] थी।

बाहर एक मन्दिरका [illegible] था। [illegible] घूम रहे थे। कुछ [illegible] एक [illegible] था [illegible] थी। [illegible] बैठे रहे थे। [illegible]

झूलती हुई भूरी अलकें पीछेकी ओर समेटीं और एक वीणा उठाकर अलसित भावसे तारोंपर उँगलियाँ फिराने लगा। उसकी पलकें मुँद गई और अजब-सा नशा उसपर छा गया। कभी जीवनमें उसपर सौन्दर्यके जादूने इतना नशा नहीं डाला था।

जब नगर-कोटसे अर्द्ध रात्रिका निर्घोष हुआ तो उसने आवाज दी। भृत्योंने आकर उसके वस्त्र उतारे और गुलाब-जलसे उसके हाथ धुलाये। तकियेपर शाल बिछा दिये गये और उनके जानेके कुछ ही क्षणों बाद उसे नींद आ गई।

जब वह सो गया तो उसने एक स्वप्न देखा। वह स्वप्न यह था—

उसने देखा कि वह एक बड़े-से प्रकोष्ठमें खड़ा है। जहाँ बहुत-सी कराहोंका शोर गूँज रहा है। पुरानी खिड़कियोंसे सहमी हुई धूप झाँक रही थी। और उसके धुँधले उजालेमें वह जालेपर झुके हुए वस्त्र-कारोंको देख रहा था। ताने-बानेके पास जर्द बीमार बच्चे बैठे थे। करघेकी गुल्ली ज्योंही इस ओरसे उस ओर फिसलती थी, वे खटका उठा देते थे और उसके गुजरते ही खटका गिराकर सूत मिला देते थे। उनके चेहरोंपर भूखकी छाया थी और उनके बाँस-से पतले हाथ कमजोरीसे काँप रहे थे। कुछ भूखी औरतें चौकीके पास बैठी कपड़े सिल रही थीं। पूरे स्थानमें एक विचित्र गरीबीकी दुर्गन्ध थी। दीवारोंपर नमी थी और लोना लग गया था।

युवराज एक वस्त्रकारके समीप गया और उसके बग़लमें खड़े होकर देखने लगा। वस्त्रकारने उसकी ओर झल्लाकर देखा और कहा—"तू मुझे क्यों देख रहा है? क्या तू मेरे मालिकका जासूस है?"

"कौन है तुम्हारा मालिक?" युवराजने पूछा।

"मेरा मालिक!" वस्त्रकार बहुत कड़वे स्वरमें बोला—"वह मेरी—

ही तरह एक मनुष्य हूँ। हाँ, हममें यह भेद अवश्य है कि मैं चीथड़े पहनता हूँ, वह रेशम पहनता है। मैं भूखों मरता हूँ, वह अपना खाना भी नहीं पचा पाता!"

"यह देश तो प्रजातन्त्रवादी है।" युवराजने कहा—"यहाँ कोई किसीका गुलाम नहीं!"

"युद्धमें विजयी पराजितको गुलाम बना लेते हैं और शान्ति कालमें धनी निर्धनको।" वस्त्रकारने कहा—"हम जीनेके लिए काम करते हैं और वह हमें इतना कम धन देते हैं कि हम मरने लगते हैं। हम दिन भर काम करते हैं, वे अपनी तिजोरीमें सोना भरते हैं। और हमारे बच्चे समयके पहले ही कुम्हला जाते हैं। हम अंगूर निचोड़ते हैं, शराब दूसरे पीते हैं। हम अनाज बोते हैं, हमारे चूल्हे ठण्डे पड़े रहते हैं। हम ज़ंजीरोंमें जकड़े हैं यद्यपि वे दिखाई नहीं देतीं, हम गुलाम हैं यद्यपि दुनिया हमें आज़ाद कहती है।

"क्या यह सभीका हाल है?" युवराजने पूछा।

"हाँ सभीका यह हाल है—बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी। व्यापारी हमें पीस डालते हैं, और हमें उन्हींके आदेश मानने पड़ते हैं। पुरोहित पास बैठे माला फेरते रहते हैं, और कोई भी हमारी परवाह नहीं करता। हमारी अन्धेरी गलियोंमें भूखी आँखों वाली ग़रीबी रेंगती रहती है। सुबह होते ही भूख हमें जगा देती है और रातको लज्जा हमारे सिरहाने कराहती रहती है। लेकिन इससे तुझे क्या? तू ग़रीब थोड़े ही है। तेरा चेहरा तो फूलकी तरह खिला है। यह कहकर मुड़ा और उसने करघेकी गुल्ली फेंक दी। युवराज यह देखकर कि उसमें सोनेका तार गुँथा है, काँप गया। उस वस्त्रकारसे पूछा—"तुम किसके वस्त्र बुन रहे हो?"

"युवराजके राज्याभिषेकके वस्त्र!" वस्त्रकारने उत्तर दिया—"इससे तुझे क्या?"

और युवराज चीख पड़ा और जाग गया।

उसने देखा कि वह अपने महलमें है और मधुवर्णी चन्द्रमा धुंधले आकाशमें तैर रहा है।

वह फिर सो गया और उसने एक स्वप्न देखा। स्वप्न यह था :—

उसने देखा कि वह एक बड़ेमें बजरेपर लेटा है जिसे एक सौ गुलाम मिलकर खे रहे हैं। उसके पार्श्वमें एक कालीनपर बजरेका मालिक बैठा है। वह आबनूसकी तरह काला था और उसकी पगड़ी लाल रेशमकी थी। बड़े-बड़े चाँदीके कुण्डल उसके कानोंमें झूल रहे थे और उसके हाथमें एक हाथीदाँतका पैमाना था।

सिवा एक मोटे लँगोटके, वे सभी गुलाम नंगे थे और हरेक अपने साथीसे जंजीरसे जकड़ा हुआ था। उनपर जलती हुई धूप तप रही थी और कोड़े लेकर हब्शी लोग उनकी देख-भाल कर रहे थे। वे अपनी पतली-पतली बाहें निकालकर पानीमें बोझीले पतवार चला रहे हैं। पतवारोंसे नमकीन फेन उछल रहा है।

ज्योंही वे एक खाड़ीमें पहुँचे उन्होंने आहट लेना शुरू किया। किनारेसे एक झोंका आया और जहाज तथा वातावरण हल्की लाल बालूसे भर गया। किनारेपर तीन अरब सवार दीख पड़े जिन्होंने इनपर भाले फेंके। बजरेके मालिकने एक रंगीन धनुष उठाया और तीर छोड़ा। एक अरब सवार घायल होकर बालूपर गिर गया और उसके साथी भाग निकले। पीले बुरकेमें लपटी हुई एक औरत मुड़-मुड़कर लाशको देखती हुई ऊँटपर बैठी हुई चली गई।

ज्योंही उन्होंने मस्तूल गिराया और लंगर डाले, हब्शी गये और एक रस्सीकी सीढ़ी लाये जिसमें शीशा लगा था। मालिकने उसे समुद्रमें डाल दिया और उसके ऊपरी सिरोंको दो लोहेकी खूँटियोंमें फँसा दिया। तब

हब्शियोंने सबसे छोटे गुलामको पकड़ा। उसके नाक और कानमें मोम भर दिया और उसकी कमरसे पत्थर बाँधकर सीढ़ीके सहारे उतार दिया। जहाँ वह उतरा, थोड़ेसे बुलबुले उठे और फूट गये। दूसरे गुलाम आश्चर्यसे उधर झाँकते रहे। बजरेके सिरेपर मगर-मछलियोंको मोहित करनेवाला एक जादूगर छोटी-सी ढोलक बजाता रहा।

थोड़ी देर बाद पनडुब्बा ऊपर आया और उसके दायें हाथमें एक मोती था। हब्शियोंने उसे छीन लिया और उसे फिर नीचे ढकेल दिया। दूसरे गुलाम अपनी-अपनी पतवारोंपर सो गये थे।

बार-बार वह ऊपर आया और हर बार उसके हाथमें एक मोती था। मालिक उन्हें तौल-तौलकर एक चमड़ेकी थैलीमें रखता जा रहा था।

युवराज कुछ बोलना चाहता था मगर उसकी जुबान तालूसे चिपक गई और उसके होठोंने हिलनेसे इन्कार कर दिया। हब्शी आपसमें चिल्ला रहे थे और दो मालाओंके लिए झगड़ रहे थे। कुछ समुद्री पक्षी नावके चारों ओर मड़रा रहे थे।

फिर पनडुब्बा ऊपर आया। इस बारका मोती सबसे सुन्दर था क्योंकि वह पूर्ण चन्द्रकी तरह गोल था और भोरके तारेसे अधिक उज्ज्वल था। लेकिन पनडुब्बेका मुख विवर्ण था और ज्योंही वह डेकपर आया उसके कान और नाकसे खून बहने लगा। क्षण भर तक वह तड़पा और फिर ठण्डा हो गया। हब्शियोंने अपने कन्धे हिलाये और उसकी लाश समुद्रमें फेंक दी।

मालिक हँसा। उसने मोती लिया, देखकर अपने माथेसे लगाया और झुककर कहा—"यह युवराजके राजदण्डमें लगेगा!"

जब युवराजने यह सुना तो वह चीख पड़ा और जग गया।

उसने देखा कि प्रभातकी भूरी अंगुलियाँ धूमिल तारेको पकड़नेका प्रयत्न कर रही हैं।

वह फिर सो गया—और उसने एक स्वप्न देखा। वह स्वप्न यह था—

उसने देखा कि वह एक धुँधले जंगलमें घूम रहा है जिसमें विचित्र फल और जहरीले फूल झूम रहे हैं। सामने गुजरनेपर साँप फुफकारते थे। और डालसे डालपर चमकदार तोते उड़ रहे थे। गर्म दलदलोंपर बड़े-बड़े कच्छप सो रहे थे। पेड़ोंमें मोर भरे थे।

वह चलता ही गया और जंगलके सिरेपर पहुँचा, वहाँ एक सूखी हुई नदीकी तलहटीमें बहुतसे मजदूर काम कर रहे थे। जमीनमें गहरे-गहरे गढे खोदकर वे उनमें घुस जाते थे। कुछ बड़ी-बड़ी चट्टानोंको कुदालोंसे फोड़ रहे थे, कुछ बालू छान रहे थे। घासको जड़से उखाड़ रहे थे और जंगली फूलोंको लापरवाहीसे कुचल रहे थे। इधर-उधर वे एक दूसरेको पुकार रहे थे और मशीनोंकी तरह काम कर रहे थे।

एक गुफाके अन्धेरेसे मौत और तृष्णा उन्हें देख रही थी। मौतने कहा—"मैं थक गई हूँ, मुझे मेरा तिहाई भाग दे दो और मैं जाऊँ।"

लेकिन तृष्णाने अपना सर हिलाया—"वे मेरी सम्पत्ति हैं।"

और मौतने पूछा—"अच्छा तो तुम्हारी मुट्ठीमें क्या है?"

"तीन दाने।" उसने उत्तर दिया—"लेकिन उससे तुझे क्या?"

"मुझे एक दे दो!" मौत चिल्लाई—"मैं उन्हें अपने बागमें बोऊँगी—सिर्फ एक दाना! फिर मैं चली जाऊँगी।"

"मैं तुझे कुछ भी न दूँगी!" तृष्णाने कहा और उन दानोंको अपनी पोशाकमें छिपा लिया।

मौत हँसी और एक प्याला लिया और उसे एक तालाबमें डुबोया। प्यालेसे महामारी निकली। वह उस भीड़में घुस गई और एक तिहाई मजदूर मरकर गिर पड़े। उसके पीछे-पीछे शीतल कोहरा था और बगलमें जल-सर्प दौड़ते जा रहे थे।

जब तृष्णाने देखा कि उसके दासोंका एक तिहाई भाग मर गया तो उसने अपनी छाती पीट ली और रो दी—"तूने मेरे एक तिहाई लोगोंको मार डाला। जा यहाँसे—तातारके पर्वतोंपर युद्ध हो रहा है। वे तुझे बुला

रहे हैं। अफ़गानोंने काले वृषभकी वलि दी है और हथियार उठा लिये हैं। मेरी घाटीमें क्या है? तू यहाँसे क्यों नहीं जाती।"

"नहीं" मौतने कहा—"जब तक तू मुझे एक दाना नहीं दे देगी मैं नहीं जाऊँगी।"

लेकिन तृष्णाने आँखें मूँदकर और दाँत पीसकर कहा—"मैं तुम्हें कुछ भी न दूँगी!"

मौत हँसी—उसने एक काला पत्थर उठाया और उसे जंगलोंमें फेंक दिया। जंगली लतरोंके कुञ्जमेंसे ज्वर निकला। उसकी पोशाक चिताकी लपटोंकी थी। वह भीड़मेंसे गुज़रा और जिसे जिसे उसने छुआ वह मर गया। उसके पैरोंके नीचेकी घास जल गई।

तृष्णाने अपना सर पीट लिया। "तू बड़ी निष्ठुर है" उसने कहा—"हिन्दोस्तानमें चहारदीवारियोंसे घिरे हुए शहरोंमें अकाल पड़ रहा है और समरकन्दके चश्मे सूख गये हैं। मिस्रमें अकाल पड़ रहा है और रेगिस्तानकी टीड़ियाँ वहाँके आसमानमें छा रही हैं। तू वहाँ जा—मुझे छोड़ दे!"

"नहीं!" मौतने जवाब दिया—"मैं बिना दाना लिये नहीं जाऊँगी!"

"मैं तुझे कुछ नहीं दूँगी। कुछ भी नहीं दूँगी!" तृष्णा बोली।

मौत हँसी और उसने सीटी बजाई। आकाशमें उड़ती हुई एक जादूगरनी आई जिसके माथेपर "प्लेग" लिखा था और उसके साथ-साथ सैकड़ों भूखे गिद्ध मड़रा रहे थे। उसने घाटीको पंखकी छाँहसे ढँक लिया और सभी लोग मर गये।

तृष्णा चीखती हुई जंगलोंमें भागी और मौत हँसकर लौट गई।

और घाटीके नीचेसे बड़े-बड़े अजगर लुढ़कते हुए निकले और बालूपर बहुत-से स्यार हवा सूँघते हुए आ गये।

युवराज रो पड़ा और बोला—"ये लोग कौन थे और क्या ढूँढ़ रहे थे?"

"राज-मुकुटके लिए हीरे ढूँढ रहे थे।" पीछेसे आवाज आई।

युवराज चौंक पड़ा। पीछे एक तीर्थयात्री खड़ा था और उसके हाथमें एक दर्पण था।

युवराज पीला पड़ गया—"किसके राजमुकुटके लिए ?"

तीर्थयात्रीने दर्पण उसके सामने कर दिया।

युवराजने उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखा और चीख पड़ा, और उसकी नींद उखड़ गई। कमरेमें चमकीली धूप चमक रही थी और बगलके कुंजोंमें पक्षी चहक रहे थे।

महासचिव और अन्य राज्याधिकारी आये और उसे प्रणाम किया। दासोंने स्वर्ण तारोंसे बुनी पोशाक, मुकुट और राजदण्ड उसके सामने रख दिये।

युवराजने उन्हें देखा। वे सुन्दर थे। लेकिन उसे अपने स्वप्न याद आ गये और दरबारियोंसे उसने कहा—"इन्हें ले जाओ, मैं नहीं पहनूँगा।"

वे आश्चर्यमें पड़ गये। उनमेंसे कुछ हँस पड़े। क्यों इन्होंने इसे मज़ाक समझा। किन्तु उसने फिर सख्तीसे कहा—"इन्हें मेरे सामनेसे ले जाओ। यह मेरा अभिषेकका दिन है, किन्तु मैं इन्हें नहीं पहनूँगा, क्योंकि करुणाके करघेपर दर्दकी सफेद अँगुलियोंने मेरी पोशाक बुनी है। हीरोंके दिलमें मौत छिपी है और मोतीके दिलमें खून लगा है!" और उसने उन्हें तीनों सपने बताये।

दरबारियोंने यह सुना और एक दूसरेके कानमें बोले—"सचमुच यह पागल है, क्योंकि सपना तो आखिर सपना होता है। उसमें सच्चाई तो होती नहीं कि कोई उनका ध्यान करे। और फिर जो लोग मेहनत करते ही हैं उनके जीवनसे हमें मतलब ? क्या बिना किसानके देखे हम रोटी ही न खायें और बिना कलवारसे बात किये हुए शराब ही न पियें ?"

और महासचिवने युवराजसे कहा—"महाराज, इन सब अंधकारमय

विचारोंको एक ओर हटाइए और राजवस्त्र धारण कीजिए। बिना उसके लोग आपको कैसे राजा समझेंगे ?"

युवराजने उनकी ओर देखा—"क्या यह बात सच है ? बिना राज-वस्त्रोंके राजाकी कोई पहचान नहीं ?"

"नहीं, महाराज वे आपको नहीं पहचानेंगे !"

"हो सकता है !" युवराजने कहा—"किन्तु मैं न यह पोशाक पहनूँगा और न ये मुकुट पहनूँगा। जैसे मैं आया था, वैसे ही मैं चला जाऊँगा !"

और उसने हरेकसे विदा ली और अपना चर्मवस्त्र निकाला। उसे पहन कर हाथमें गड़रियों वाला डण्डा लेकर चल पड़ा।

उसके साथी एक शिशुदासने अपनी नीली आँखें फैलाकर कहा—"महाराज, आपकी पोशाक और राजदण्ड तो हैं। आपका मुकुट कहाँ है ?"

युवराजने जंगली लतरके फूलोंका एक गुच्छा तोड़ लिया और उसको वृत्ताकार मोड़कर अपने सरपर रख लिया।

इस प्रकार सजकर वह उस बड़े प्रकोष्ठमें गया जहाँ उसकी प्रजा प्रतीक्षा कर रही थी।

लोग हँस पड़े। एक बोला—"महाराज, प्रजा अपने सम्राट्की प्रतीक्षा कर रही है और आप भिखमंगोंका रूप धारण किये हैं।"

दूसरे लोग नाराज हो गये और बोले—"वह राज्यका अपमान कर रहा है।" लेकिन युवराजने कुछ भी उत्तर नहीं दिया और उनके बीचसे चुपचाप गुजर गया। बड़ेसे फाटकको पारकर वह घोड़ेपर सवार होकर गिरजेकी ओर चल दिया।

राहगीरोंने देखा, वे हँसकर बोले—"यह देखो राजाका विदूषक जा रहा है।"

युवराज रुककर बोला—"नहीं, मैं ही राजा हूँ।" और उनसे अपने सपने बताये।

भीड़मेंसे एक मनुष्य आगे बढ़ा और उससे बड़े कड़ुए स्वरोंमें कहा—

"महाराज, क्या आप नहीं जानते कि धनपतियोंके ऐश्वर्य दरिद्रोंके ही जीवनका मूल्य देकर खरीदे जाते हैं। किन्तु किसी मालिकके लिए श्रम करना इससे तो अच्छा ही है कि व्यर्थ ही श्रम किया जाय। फिर हमें खिलायेगा कौन ? आप कर ही क्या सकते हैं ? क्या आप हरेक वस्तुके क्रय-विक्रयपर नियन्त्रण कर सकेंगे ? मुझे तो विश्वास नहीं है। इसलिए आप महलमें अपने गद्दोंपर लौट जाइए, और हमें हमारे भाग्यपर छोड़ दीजिए।"

"क्या अमीर और गरीब आपसमें भाई-भाई नहीं है ?" युवराजने पूछा।

"क्यों नहीं ?" उसने उत्तर दिया—"और अमीरोंके हाथ अपने भाइयोंके खूनसे रंगे हुए हैं।"

युवराजकी आँखोंमें आँसू छलछला आये और वह असन्तुष्ट जनताकी भीड़को चीरता हुआ चल दिया।

जब वह गिरजाघरके दरवाजेपर पहुँचा तो सन्तरियोंने भाले अड़ाकर पूछा—"तू यहाँ क्यों आया है ? सिवा राजाके और कोई यहाँसे नहीं जा सकता।"

उसका चेहरा क्रोधसे तमतमा गया—"मैं राजा हूँ !" उसने कहा, भाले हटे और राजा धड़धड़ाता हुआ अन्दर चला गया।

जब बूढ़े बिशपने उसे हरवाहोंकी पोशाकमें आते देखा तो आश्चर्यमें पड़कर अपने सिंहासनसे उठ खड़ा हुआ और बोला—"वत्स, यह क्या राजाओंकी पोशाक है ? और किस मुकुटसे मैं तुम्हारा अभिषेक करूँ ? तुम्हारा राजदण्ड कहाँ है ? यह तो तेरे लिए आनन्दका दिन है—पश्चात्तापका तो नहीं ?"

"तो क्या आनन्दके दिन वह वस्त्र पहने जाते हैं जो निश्वासके डोरोंसे बुने हों ?" युवराजने कहा और अपने स्वप्न बताये।

और जब विशप उन्हें सुन चुका तो उसने भवें सिकोड़ीं और कहा—"मेरे वत्स, मैं बूढ़ा हूँ। मौतके क़रीब हूँ और जानता हूँ कि संसारमें बहुत-सी बुराइयाँ हैं। पहाड़ोंसे भयानक डाकू उतरकर बच्चे चुरा ले जाते हैं और उन्हें बेच देते हैं। कुंजोंमें यात्रियोंकी प्रतीक्षामें सिंह छिपे रहते हैं, खेतोंमें जंगली सुअर फसल रौंद डालते हैं। समुद्री डाकू तटोंपर घूमते रहते हैं। खारे दलदलोंमें कोढ़ी रहा करते हैं। शहरकी सड़कोंपर भिखमंगे घूमते हैं और कुत्तोंके साथ-साथ खाते हैं। किन्तु तुम क्या कर सकते हो? क्या कोढ़ीको तुम अपनी शय्यापर सुला सकते हो? क्या तुम भिखमंगेको अपनी थालीमें खिला सकते हो? क्या सिंह तुम्हारे कहनेसे हिंसा छोड़ देगा? फिर जिसने इस संसारमें दुःख बनाया है वह तुमसे अधिक बुद्धिमान् है। तुमने जो किया मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ लेकिन अब तुम अपने महलमें लौट जाओ। सपनोंके बारेमें अब मत सोचो। यह दुनिया इतनी बड़ी है कि एक ही व्यक्ति उसका भार नहीं उठा सकता!"

"यह सब तुम इस पवित्र भवनमें कह रहे हो?" युवराजने कहा और वह बिशपके पाससे हटकर पवित्र वेदीपर ईसाकी मूर्तिके सम्मुख खड़ा हो गया!

वह ईसाकी प्रतिमाके सम्मुख खड़ा था। उसके दायें-बायें बड़े-बड़े स्वर्ण-कलश रखे थे। वह झुका। हीरेके शमादानोंमें मोमदीप जल रहे थे और सुगन्धित धूप पतले गुच्छोंमें लहरा रही थी। उसने प्रार्थनामें अपना सर झुकाया। पुरोहित वहाँसे हट गये।

एकाएक बाहरसे शोरकी आवाज़ आई। सहसा बड़े-बड़े पदाधिकारी शिरस्त्राण पहने, ढाल हिलाते, तलवार खींचे घुस आये। "कहाँ है वह सपनोंमें डूबा रहनेवाला कायर? कहाँ है वह जिसने हमारे सर शर्मसे झुका दिये? वह राज्यके अयोग्य है। हम उसे जीवित नहीं छोड़ेंगे।"

युवराजने अपना सर उठाया और जब वह प्रार्थना कर चुका तो उठा और घूमकर उदास चेहरेसे उनकी ओर देखा।

और लो ! रंगीन वातायनोंसे उसपर धूप खिल गई और किरणोंने उसके शरीरपर ऐसा सुनहला जाल बुन दिया जो उसके राजवस्त्रोंसे अधिक सुन्दर था !

वह वहाँ उस राजवस्त्रमें खड़ा रहा । हीरेके द्वार खुल गये और उसमें विचित्र रहस्यमय दीप जल उठे । वह वहाँ खड़ा रहा और प्रकोष्ठमें ईश्वरका प्रकाश भर गया । वाद्य यन्त्र बजने लगे, और गायकोंने गीत गाने प्रारम्भ कर दिये ।

लोग घुटनोंपर झुक प्रार्थना करने लगे । सरदारोंने सर झुका लिया । विशप पीला पड़ गया और उसके हाथ काँपने लगे । सरदारोंने सर झुका लिया "तू राजाओंका भी राजा है" उसने कहा और चरणोंपर गिर पड़ा ।

युवराज वेदीपरसे उतरा और जनताको चीरकर घरकी ओर लौट पड़ा । किन्तु उसके मुखकी ओर देखनेका साहस किसीको भी न हुआ क्यों कि उसपर देवदूतोंकी छाया थी, क्रान्ति थी, सौन्दर्य था ।

तारा-शिशु

एक बार एक चौड़के जंगलसे होकर दो गरीब लकड़हारे अपने घरकी ओर जा रहे थे। जाड़ेका मौसम था और रातका वक्त। धरतीपर और पेड़की शाखोंपर बरफ़ बिछी हुई थी और उनकी पगडण्डीके दोनों ओरकी झाड़ियोंकी कोपलें पालेमें ठिठुर रही थीं। पासकी पहाड़ीकी निर्झरिणी ठण्डसे जम गई थी क्योंकि बर्फ़के राजाने उसे चूम लिया था।

इतनी ठण्डक थी कि चिड़ियाँ और जानवर भी परेशान थे।

"उफ़" पूँछ दबाये हुए भेड़ियेने कहा—"कितना तकलीफ़देह मौसम है। सरकार इसका ध्यान क्यों नहीं रखती ?"

"ट्वी ट्विट !" हरी लिनेट चिड़ियाने कहा—"बुड्ढी धरती मर गई है और उन्होंने उसे कफ़न ओढ़ा दिया है !"

"नहीं—धरतीका ब्याह होनेवाला है और लोगोंने उसे शादीकी पोशाक पहना दी है।" गौरैयोंने एक दूसरेसे कहा। उनके पाँव ठण्डसे जम गये थे मगर वे सदा हर परिस्थितिको रोमाण्टिक दृष्टिकोणसे देखती थीं।

"उँहू, बिलकुल गलत !" भेड़िया गुर्राया—"मैं तुमसे कह रहा हूँ कि यह सब सरकारकी गलती है, और अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगी तो मैं तुम्हें खा डालूँगा!" भेड़िया जरा राजनीतिज्ञ था और बहसमें दलीलोंकी कभी उसे कमी नहीं पड़ती थी।

"जहाँ तक मेरे विश्वासका सवाल है;" उल्लू बोला, जो कि पूरा दार्शनिक था—"मैं विज्ञान आदिकी कोई जरूरत ही नहीं समझता।

"लो ! यह तो सोना बरस रहा है।" वे दोनों चीखे और दौड़ पड़े। वे सोनेके लिए इतने उत्सुक थे।

उनमेंसे एक अपने साथीके मुकाबिलेमें जल्दी पहुँच गया। वह झाड़ियाँ चीरता हुआ वहाँ पहुँचा तो देखा कि सचमुच सफेद बरफपर कोई सोनेकी चीज पड़ी थी। वह झुका और उसने हाथसे उसे छुआ। वह एक लबादा था जो सोनहले तारोंसे बुना था और उसमें सलमे सितारे जड़े थे। उसने अपने साथीको भी पुकारा और जब वह आ गया तो दोनोंने मिलकर लबादेके बटन खोले ताकि वे सोनेका हिस्सा-बाँट कर लें। मगर अफसोस न उसमें सोना था, न चाँदी थी, न कोई खजाना था, महज एक छोटा-सा, भोला-सा बच्चा उसमें सो रहा था।

और उनमें-से एकने कहा—"लो! हमारी सभी आशाओंपर पानी फिर गया। भला बच्चेसे हमें क्या फायदा ? इसे छोड़कर चुपचाप घर चले चलो ! हम खुद अपने ही बच्चोंके लिए खाना नहीं जुटा पाते हैं।"

मगर उसके साथीने जवाब दिया—"नहीं, यह तो बड़ी खराब बात है कि हम बच्चेको यहीं बर्फमें गलनेके लिए छोड़ दें। मैं भी गरीब हूँ और मेरे यहाँ भी खाना कम है खानेवाले बहुत; मगर फिर भी मैं इसे घर ले जाऊँगा और मेरी स्त्री इसे और पालेगी !"

उसने बड़े नरम हाथोंसे बच्चेको उठा लिया और उसके चारों ओर लबादा लपेट दिया ताकि उसे सरदी न लग जाय और घरकी ओर चल दिया। उसका साथी रास्ते भर उसकी मूर्खता और भावुकतापर ताज्जुब करता रहा।

और जब वे गाँवके पास आये तो उसके साथीने कहा—"तूने बच्चेको अपने हिस्सेमें लिया तो यह लबादा मुझे दे दे, ताकि हममें उचित हिस्सा-बाँट हो जाय।

मगर उसने जवाब दिया—"लबादा न मेरा है न तेरा, वह तो बच्चे-का है !"

इसपर उसका साथी नाराज़ हो गया और अपने घर चल दिया।

पहला लकड़हारा बच्चेको लेकर अपने दरवाज़ेपर पहुँचा। औरतने दरवाज़ा खोला और उसका मुसकुराकर स्वागत किया और खुद पीठपरसे लकड़ीका गट्ठर उतार लिया।

लकड़हारा बोला—"मैंने जंगलमें आज एक नायाब चीज़ पाई है और उसे तुझे सहेजने ले आया हूँ!"

"क्या लाये हो!" स्त्रीने उत्सुकतासे पूछा—"मुझे दिखाओ!"

"भगवान् तुम्हारा भला करे!" उसने कहा—"क्या हमारे बच्चे कम थे कि तुम और एक बच्चा ले आये! हम भला इसे कैसे पालेंगी?" और वह नाराज़ होने लगी!

"मगर यह तो तारा-शिशु है!" उसने जवाब दिया—और उसने बताया कि कैसे अजब तरीक़ेसे यह बच्चा उसे मिला।

मगर इसपर भी वह शान्त न हुई और उसका मज़ाक उड़ाते हुए ग़ुस्सेमें बोली—"हमारे बच्चे भूखों मरेंगे और दूसरोंके बच्चे पेट भरेंगे? कौन हमारी पर्वाह करता है? हमें कौन खाना देता है?"

"ईश्वर पशु-पंछी तकका ध्यान करता है, हम तो खैर आदमी हैं!"

"मगर पशु-पंछी भी जाड़ेमें अकड़कर मर जाते हैं और आज कल जाड़ा ही तो है।"

लकड़हारेने कोई जवाब न दिया और चुप-चाप बैठा रहा। जंगलकी ओरसे ठण्डी हवाका एक झोंका आया और वह काँप गई।

दरवाज़ा क्यों नहीं बन्द कर देते। इतनी ठण्डी हवा आ रही है।"

"जिस घरके रहनेवालोंका दिल सर्द हो जाता है वहाँ हमेशा सर्द वर्फ़ानी झोंके बहते हैं!" उसने कहा!

औरतने कोई जवाब न दिया वह महज़ आगके और नज़दीक खसक ई। थोड़ी देर बाद वह मुड़ी और आँखोंमें आँसू भरकर उसने अपने ओर देखा। उसने जल्दीसे उठकर वह बच्चा उसकी गोदमें रख

दिया। लकड़हारिनने उसे चूमा और अपने बच्चोंके खटोलेपर सुला दिया। दूसरे दिन लकड़हारेने उस सुनहले लबादेको और बच्चेकी गर्दनमें पड़ी हीरेकी जंजीरको एक सन्दूकमें बन्द कर दिया।

इस तरह धीरे-धीरे तारा-शिशु उसी लकड़हारेके बच्चोंके साथ बड़ा हुआ। वह उन्हींके साथ खाना खाता था और उन्हींके साथ खेलता था। हर रोज उसका सौन्दर्य बढ़ता जाता था। गाँववाले दंग थे क्योंकि वे कुरूप और अनाकर्षक थे, जब कि तारा-शिशु हाथी-दाँतकी तरह गोरा था और उसके बाल सुनहले छल्लोंकी तरह थे, उसके होंठ गुलाबकी पाँखुड़ियोंकी तरह थे और उसकी आँखें नरगिसकी तरह थीं।

मगर उसका सौन्दर्य उसके लिए फ़ायदेमन्द नहीं साबित हुआ। वह घमण्डी, स्वार्थी और क्रूर हो गया। वह लकड़हारे तथा दूसरे देहातियोंके बच्चोंको नीची निगाहसे देखता था, क्योंकि वे छोटे खानदानके थे, जब कि वह खुद एक तारेकी सन्तान था। वह खुद उनका मालिक बन बैठा और उन्हें अपना नौकर समझने लगा। उसके मनमें गरीबोंके लिए कुछ भी रहम नहीं था और न वह अन्धे या लँगड़े-लूलोंके प्रति ही कुछ भी सहानुभूति करता था। वह उनपर पत्थर फेंकता था और उन्हें भगा देता था। वह अपनी ख़ूबसूरतीपर घमण्ड करता था और दूसरोंका मज़ाक उड़ाता था। वह गर्मियोंमें झीलके किनारे लेट जाता था और खुद अपना प्रतिबिम्ब देखकर खुशीसे हँस पड़ता था।

कभी-कभी लकड़हारा और उसकी स्त्री उसे डाँटा करते थे और पूछते थे—"हम लोगोंने कभी तेरे साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया जैसा तू दूसरोंके साथ करता है। तू क्यों उन लोगोंके साथ क्रूरताका व्यवहार करता है जिन्हें दयाकी ज़रूरत है।"

एक बार बुड्ढे पुरोहितने उसे जीवोंसे प्रेम करनेका उपदेश दिया—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुझसे यह सवाल पूछनेवाला कौन है ? मैं तेरा लड़का थोड़े ही हूँ जो यह रोब सहूँ !"

"ठीक है !" लकड़हारेने कहा—"मगर जब मैंने तुझे जंगलमें पाया था तो मैंने तुझपर कितनी दया दिखलाई थी !"

और जब भिखारिनने यह वाक्य सुना तो वह चीख पड़ी और बेहोश हो गई। लकड़हारा उसे घर ले गया और उसकी औरतने भिखारिनकी शुश्रूषा की जिससे उसे होश आ गया। उसके बाद लकड़हारेने उसके सामने कुछ खानेका सामान रक्खा।

मगर उसने कुछ भी नहीं खाया-पीया और लकड़हारेसे कहा—"क्या तुमने यह बच्चा जंगलमें पाया था ? क्या यह दस साल पहलेकी बात है ?"

और, लकड़हारेने कहा—"हाँ, मैंने दस साल पहले यह बच्चा जंगलमें पाया था !"

"और इसके साथ क्या निशानी थी ?" भिखारिनने व्याकुल होकर पूछा—"क्या उसके गलेमें कोई जंजीर थी ? क्या वह कोई जरीदार लबादा ओढ़े था ?"

"हाँ, बिल्कुल यही निशानी थी !" लकड़हारेने कहा और उसके बाद उसने सन्दूकसे निकालकर दोनों चीजें उसे दिखलाईं !

जब उसने वे दोनों चीजें देखीं तो वह खुशीसे रोने लगी—"वह मेरा बच्चा है जिसे मैं जंगलमें छोड़ आई थी। जल्दी बुलाओ उसे मैं उसकी खोजमें सारी दुनिया घूम आई हूँ !"

लकड़हारा बाहर गया और ताराशिशुको बुलाकर उससे कहा—"घर चल। वहाँ तेरी माँ बैठी तेरा इन्तजार कर रही है !"

वह ताज्जुब और खुशीसे पागल होकर अन्दर दौड़ गया। मगर जब उसने उसे देखा तो वह नफ़रतसे बोला—"कहाँ है मेरी माँ ? यह तो वही भिखारिन है !"

"मैं तेरी माँ हूँ बेटा !" भिखारिनने प्यारसे कहा।

"छिः, तुम मेरी माँ हो—तुम कितनी गन्दी और ग़रीव हो! मैं तुम्हारा लड़का नहीं हो सकता! जाओ भागो यहाँ से!"

"नहीं वेटा! तू मेरा ही लड़का है!" उसने घुटने टेककर वाहें फैलाकर कहा—"डाकुओंने तुझे चुराकर जंगलमें छोड़ दिया था। मगर तुझे देखते ही मैं पहचान गई और तेरी निशानियाँ भी मिल गईं। तू मेरा ही वेटा है। भैया! चल मेरे साथ, लाल! मैं सारी दुनियामें तुझे खोज-खोज कर हार गई!"

मगर ताराशिशु अपनी जगहसे नहीं हिला। सारे कमरेमें सन्नाटा था महज़ उस औरतकी सिसकियाँ वातावरणमें गूँज रही थीं।

और अन्तमें वह वोला—"अगर तू सचमुच ही मेरी माँ है तो भी अच्छा हो कि तू यहाँसे चली जा और मुझे शर्मिन्दा न कर क्योंकि मैं समझता था कि मैं किसी भिखारिनकी नहीं वरन तारोंकी सन्तान हूँ। इसलिए तू यहाँसे चली जा।"

"हाय मेरे लाल! तू कितना निर्मोही है।" भिखारिन वोली—"मैंने छातीपर पत्थर रखकर तुझे ढूँढ़ा है! चलनेके पहले क्या तू मुझे चूमेगा भी नहीं!"

"मैं और तुझे चूमूँगा!—तेरे वजाय मैं किसी छिपकली या साँपको चूमना ज़्यादा पसन्द करूँगा!

भिखारिन उठी और सिसकते हुए जंगलकी ओर चली गई। ताराशिशु ने देखा कि वह चली गई तो वह वहुत ख़ुश हुआ और हँसते हुए अपने साथियोंमें खेलने चला गया।

मगर जब उसके साथियोंने उसे देखा तो वे मुँह चिढ़ाकर वोले—", तू तो छिपकलीकी तरह वदशकल और साँपकी तरह घिनौना है!

जा, भाग; हम लोग तेरे साथ नही खेलेंगे !" और उन्होंने उसे बगियासे बाहर भगा दिया।

ताराशिशु अचरजमें पड़कर सोचने लगा—"यह लोग ये क्या कह रहे हैं ? मैं अभी झीलमें जाकर अपनी परछाईं देखता हूँ !"

और जब उसने झीलके पानीमें झाँका तो उसने देखा कि उसका चेहरा छिपकलीकी तरह था और उसका बदन साँपकी तरह टेढ़ा हो गया था। वह घासपर लेट गया और रोने लगा, और बोला—"सचमुच यह मेरे पापोंका फल है। मैंने अपनी माँका अपमान किया और उससे घमण्ड और क्रूरताका बर्ताव किया। मैं जाऊँगा और सारे संसारमें उसे ढूँढ़ूँगा, बिना उसके प्यारके मुझे चैन नही मिलेगा।

इसी समय लकड़हारेकी लड़की आई और उसने प्यारसे कहा "क्या हुआ अगर तुम्हारा सौन्दर्य नष्ट हो गया ! तुम मेरे साथ रहो मैं तुम्हारी हँसी नही उड़ाऊँगी !"

और उसने उससे कहा—"नही, मैंने अपनी माताके साथ बेरहमीका व्यवहार किया है और यह शाप मुझे वास्तवमें उसीकी सजा है। मैं सारी दुनियामें उसे ढूँढ़ूँगा, उससे क्षमा माँगे बिना मुझे चैन नही मिलेगा !"

वह जंगलमें जाकर माँको पुकारने लगा मगर उसकी पुकारका कोई भी जवाब नहीं मिला। दिनभर वह चीखता रहा और जब शाम हुई तो वह जमीनपर लेट गया। सभी पशु-पक्षी उसपर हँसते हुए अपने घोंसलों-को चल दिये क्योंकि उसने हमेशा उन्हें सताया था। केवल छिपकलियाँ उसे देखती रहीं और साँप उसके पास रेंगते रहे।

सुबह होते ही उसने पेड़से तोड़कर कड़ुवे बेर चाखे और आगे चल दिया। रास्तेमें सबसे वह माँके बारेमें पूछता जाता था।

उसने चूहेसे पूछा—"तू तो जमीनके अन्दर जा सकता है, बता मेरी माँ कहाँ है ?"

चूहेने जवाब दिया—"तूने पहले ही मेरी आँखें फोड़ दीं अब मैं तो देख भी नहीं सकता !"

उसने चीड़के पेड़में रहनेवाली छोटी गिलहरीसे पूछा—"तुम्हें मालूम है मेरी माँ कहाँ है ?"

गिलहरीने जवाब दिया—"तूने मेरी माँको तो मार डाला—क्या अब अपनी माँको भी इसीलिए ढूँढ़ रहा है ?"

ताराशिशु रो पड़ा और दिलमें उन सबसे क्षमा माँगते हुए आगे चल पड़ा। दूसरे दिन वह जंगल पारकर मैदानमें आ गया।

और, जब वह गाँवोंसे गुज़रता था तो बच्चे उसका पीछा कर और उस पर पत्थर फेंकते थे। लोग उसे सरायमें नहीं रुकने देते थे, किसान उसे खेतोंसे नहीं गुजरने देते थे और दुनिया उससे नफ़रत करती थी ! तीन साल तक घूमते रहनेके बाद भी उसे उसकी माँ नहीं मिली। कभी-कभी वह उसे दूर सड़कपर बैठी हुई दीख पड़ती थी, वह उसको पुकारकर पीछे दौड़ता था, उसके पैरमें कंकड़ चुभ जाते थे और ख़ून बहने लगता था, मगर कभी भी वह अपनी माँके नज़दीक तक नहीं पहुँच पाता था। राहगीर इसे उसकी नज़रोंका धोखा बतलाते थे और उसका मज़ाक उड़ाते थे।

तीन साल तक वह सारी दुनियामें घूमता रहा मगर दुनियामें न प्यार था, न दया थी और न सहानुभूति। यह दुनिया वैसी ही थी जैसा कि वह अपने सौन्दर्यके ज़मानेमें था।

एक दिन शामको वह नदीके किनारे एक शहरके समीप आया जिसके चारों ओर एक मजबूत परकोटा था। वह थका और परेशान था मगर वह अन्दर गया। किन्तु द्वार-रक्षक सिपाहियोंने भाले अड़ाकर उसे रोक दिया और पूछा—"तू क्यों शहरमें जाना चाहता है ?"

मैं अपनी मांको ढूँढ रहा हूँ। तुम लोग मुझे अन्दर जाने दो। सम्भव है वह यहीं हो।" उसने जवाब दिया।

मगर वे लोग उसपर हँसने लगे। उनमेंसे एक अपनी ढाल नीचे रख कर बोला—"सच तो यह है कि अगर तेरी माँ तुझे देखेगी तो भी खुश न होगी, क्योंकि तू गन्दी छिपकलियोंसे ज्यादा बदसूरत और साँपोंसे ज्यादा घिनौना है। जा भाग यहाँसे! तेरी माँ इस शहरमें नहीं है!"

जब वह रोते हुए वापस आ रहा था तो एक व्यक्ति जिसके हथियारों पर फूल बने थे और जिसके शिरस्त्राणपर पंखदार शेर बने थे, आया और द्वाररक्षकोंसे पूछने लगा कि कौन अन्दर आना चाहता था। उन्होंने कहा—"वह एक भिखमंगा लड़का था और हम लोगोंने उसे भगा दिया।"

"नहीं!" वह हँसते हुए बोला—"उसे पकड़कर बेच दो। उसके दामोंसे कमसे कम हमारी शराबका इन्तजाम हो जायगा।"

और एक बुड्ढा और खूँखार आदमी जो बगलसे गुजर रहा था, बोला कि—"मैं उसे खरीद लूँगा!" और सचमुच वह उतना दाम देकर ताराशिशुको अपने साथ घसीट ले गया।

कई सड़कोंसे गुजरनेके बाद वह एक मकानके सामने पहुँचा जिसके सामने एक अनारका पेड़ था। बुड्ढेने एक हीरेकी अँगूठीसे दरवाजा छुआ और वह खुल गया। उसने देखा कि बादमें ५ ताँबेकी सीढ़ियाँ उतरनेके बाद एक बाग था जिसमें गेरुवे गमलोंमें पोस्तके फूल लगे थे। उसके बाद बुड्ढेने एक छापेदार रेशमी रूमालसे ताराशिशुकी आँखें बाँध दीं और तब उसे आगे ले चला। जब रूमाल खोला गया तो उसने देखा कि वह एक तहखानेमें है।

बुड्ढेने उसे कुछ खाना दिया और एक प्यालेमें पानी। जब वह खा-पी चुका तो बुड्ढा बाहरसे ताला बन्द कर चला गया।

बुड्ढा वास्तवमें लीबियाका मशहूर जादूगर था और उसने मिसके मकबरोंमें रहनेवाले पीरोंसे जादू सीखा था। उसने कहा—"शहरके पास-

के एक जंगलमें सोनेके तीन टुकड़े हैं—सफ़ेद, पीला और लाल। जा और जाकर सफ़ेद टुकड़ा उठा ला। अगर तू उसे आज नहीं ला सका तो मैं तुझे सौ कोड़े लगाऊँगा। मैं बाग़के दरवाज़ेपर तेरा इन्तज़ार करता रहूँगा।" और उसने उसकी आँखोंमें छायेदार रेशमी रूमाल बाँधकर पोस्तके बाग़ और ताम्बेकी सीढ़ियोंपर घुमाते हुए घरसे निकाल दिया।

ताराशिशु शहरके बाहर गया और जादूगरके बताये हुए जंगलमें पहुँचा।

बाहरसे देखनेपर यह जंगल बहुत ही आकर्षक लगता था। उसमें महकदार फूल थे, सुरीली आवाज़वाली चिड़ियाँ थीं—ताराशिशु खुशीसे उसके अन्दर गया! मगर फिर भी जंगलके सौन्दर्यका उसे कुछ आनन्द नहीं मिल पाया, क्योंकि जहाँ वह जाता था ज़मीनसे काँटे उभर आते थे और चुभ-चुभकर उसे परीशान कर डालते थे। न उसे कहीं भी वह सफ़ेद सोनेका टुकड़ा ही मिला जिसे वह सुबहसे दोपहर और दोपहरसे शाम तक ढूँढ़ता रहा—शामके वक़्त वह शहरकी ओर रोते हुए मुड़ा क्योंकि वह जानता था कि क्या सज़ा मिलनेवाली है।

मगर जब वह जंगलके किनारे पहुँचा तो उसने दर्दकी तेज़ चीख सुनी और वह फ़ौरन अपना दर्द भूलकर वहाँ पहुँचा। उसने देखा कि एक खरगोश किसी शिकारीके जालमें फँस गया है।

ताराशिशुको उसपर रहम आ गया और उसने उसे आज़ाद करते हुए कहा—"मैं ग़ुलाम भले ही होऊँ मगर मैं तुम्हें ज़रूर आज़ाद कर दूँगा।"

और खरगोशने उसे जवाब दिया—"सचमुच तूने मुझे आज़ाद किया, मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ?"

ताराशिशुने उससे कहा—"मैं एक सफ़ेद सोनेका टुकड़ा ढूँढ़ रहा हूँ मगर मुझे नहीं मिला। और अगर वह मुझे नहीं मिलेगा तो मेरा मालिक बहुत मारेगा!"

"मेरे साथ आ, मैं तुम्हें वह सोनेका टुकड़ा दूँगा !"

वह खरगोशके साथ गया और लो, एक शहबलूतके कोटरमें सफेद सोनेका टुकड़ा रक्खा था। वह खुशीसे उछल पड़ा और खरगोशसे बोला—"जो मैंने तेरे लिए किया उससे कहीं ज्यादा तूने मेरे लिए किया है—मैं तेरा बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ !"

"नहीं, ऐसी क्या बात है !" खरगोशने जवाब दिया—"तूने मेरे साथ जो किया था, मैंने भी अपना फर्ज समझकर वही किया !" और उसके बाद खरगोश भाग गया।

शहरके दरवाजेपर एक बीमार फकीर बैठा था। जब उसने ताराशिशु-को आते हुए देखा तो उसने अपना लकड़ीका प्याला खड़काया। उसको पुकारकर कहा—"मुझे पैसा दो बाबू—मैं भूखसे मर रहा हूँ। लोगोंने मुझे शहरसे निकाल दिया, किसीने मुझपर दया नहीं की !"

"अफसोस ! मेरे पास केवल एक सोनेका टुकड़ा है और अगर मैं वह तुझे दूँगा तो मेरा मालिक मुझे मारेगा !"

मगर भिखारीने उससे मिन्नत की तो ताराशिशुने उसे वह टुकड़ा दे दिया।

जब वह जादूगरके घर आया तो अन्दर आकर जादूगरने पूछा—"क्या तुम वह सोनेका टुकड़ा लाये हो ?" जब उसने जवाब दिया "नहीं !" तो जादूगरने उसे बेहद मारा और खाली प्याला उसके सामने रखकर कहा—"लो खाओ" और खाली गिलास रखकर कहा—"लो पियो !" और फिर उसे तहखानेमें बन्द कर दिया।

दूसरे दिन जादूगर आया और बोला—"अगर आज तू पीले सोनेका टुकड़ा नहीं लाया तो मैं तुझे ३०० कोड़े मारूँगा !"

ताराशिशु जंगलमें गया और दिनभर उसने सोनेका टुकड़ा ढूंढ़ा मगर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"ओह ! तू जिस सोनेके लिए रो रहा है वह तेरे ही पासकी खोहमें रक्खा है !"

"आह ! मैं तुझे कैसे धन्यवाद दूँ। तूने आज मुझे तीसरी बार सहायता दी है।"

"कुछ नहीं ! तूने पहले मुझपर दया की थी !" खरगोश बोला और भाग गया !

ताराशिशुने खोहसे सोना निकाला और शहरकी ओर चल दिया। जब फकीरने उसे आते हुए देखा तो वह फाटकके बीचों-बीच खड़ा होकर बोला—"मुझे कुछ दो मालिक ! वरना मैं भूखों मर जाऊँगा !"

ताराशिशुने वह लाल सोना उसके प्यालेमें डाल दिया और कहा—"तुम्हारी जरूरत मेरी जरूरतसे बड़ी है !" मगर वह मन-ही-मनमें अपनी जिन्दगीसे मायूस हो चुका था।

किन्तु लो ! ज्यों ही वह फाटकसे निकला द्वारपालोंने उसे झुककर नमस्कार किया और कहा—"हमारा मालिक कितना सुन्दर है !" नागरिकोंकी एक भीड़ उसके पीछे लग गई और बोली—"सचमुच दुनियामें कोई इससे ज्यादा सुन्दर नहीं है !"

ताराशिशु रोने लगा और बोला—"ये लोग मुझपर व्यंग्य कस रहे हैं !" भीड़ इतनी ज्यादा बढ़ गई थी कि वह राह भूल गया और एक राजमहलके पास पहुँच गया।

राजमहलके फाटक खुले और राज्याधिकारी और पुरोहित उसके स्वागतके लिए निकल आये—"आप हमारे मालिक हमारे राजकुमार हैं जिनकी हमलोग इतने दिनोंसे प्रतीक्षा कर रहे थे।"

ताराशिशुने उन्हें जवाब दिया—"मैं राजकुमार नहीं, एक भिखारिन-

की सन्तान हूँ। तुम कहते हो मैं सुन्दर हूँ, मेरी बदसूरतीका मज़ाक मत उड़ाओ !"

वह व्यक्ति, जिसके हथियारोंपर फूल और शिरस्त्राणपर उड़न-शेर बना था, बोला—"आप कैसे कहते हैं कि आप बदसूरत हैं ?"

और ताराशिशुने उसकी आँखोंमें अपनी छवि देखी। उसका सौन्दर्य वापस आ गया था।

पुरोहित और अधिकारीगण उसके सामने झुके और बोले—"यह भविष्य वाणी थी कि आजके दिन साकार सौन्दर्य हमपर राज करने आयेगा। आप यह मुकुट लीजिए और यह राजदण्ड, और हमपर राज कीजिए !"

मगर वह बोला—"मैं इस योग्य नहीं हूँ। मैंने अपनी जननीका अपमान किया है और जबतक मैं उसे ढूँढ़ नहीं लूँगा तबतक मुझे चैन नहीं मिलेगा। तुम मुझे मुकुट और छत्र दे रहे हो मगर मैं सारी दुनिया घूमकर उसे ढूँढ़ूँगा और उससे क्षमा मागूँगा।" और इतना कहनेके बाद ज्योंही उसने फाटककी ओर सर घुमाया तो देखा कि भीड़में उसकी भिखारिन माँ खड़ी है और उसके बग़लमें वही फ़क़ीर खड़ा है।

वह खुशीसे चीख पड़ा और दौड़कर माँके पैरोंपर पड़ गया और अपने आँसूसे उसके ज़ख्म भिगोने लगा।

"माँ !" उसने सिसकते हुए कहा—"माँ, घमण्डके क्षणोंमें मैंने तुम्हें ठुकराया, आज मैं तुम्हारे स्नेहकी भीख माँग रहा हूँ। मैंने तुम्हें तिरस्कार किया, तुम मुझे वात्सल्य दो !" मगर भिखारिन कुछ नहीं बोली।

वह दौड़कर फ़क़ीरके पैरपर गिरकर बोला—"मैंने तीन बार तुमपर दया की, आज तुम मेरी माँको मना दो !" मगर फ़क़ीर भी कुछ नहीं बोला !

वह फिर सिसकता हुआ बोला—"माँ, अब मुझसे नहीं सहा जाता। मुझे क्षमा कर दो, माँ !"

भिखारिनने उसके सिरपर हाथ रक्खा और कहा "उठो !"—फकीरने उसके सिरपर हाथ रक्खा और कहा—"उठो !" और वह उठकर खड़ा हुआ और उसने देखा—एक राजा और रानी खड़े हैं।

और रानीने कहा—"यह तेरे पिता हैं जिसपर तूने दया की थी !"

और राजाने कहा—"यह तेरी माँ है जिसके जख्मोंको तूने आँसुओंसे धोया है !"

उन्होंने उसका मस्तक चूमा और वे उसे महलमें ले आये। उन्होंने उसे सुन्दर पोशाक पहनायी, उसके माथेपर मुकुट रक्खा, उसके हाथमें राजदण्ड दिया और वह उस शहरका राजा हो गया। उसने दयाका शासन किया, प्रजाको सन्तुष्ट रक्खा और लकड़हारेके परिवारको बड़ा आदर और धन दिया। उसने दया और प्रेमका उपदेश दिया। भूखोंको रोटी और नंगोंको कपड़ा दिया और देशमें सुख-शान्तिकी स्थापना की।

मगर उसपर इतने दुःख पड़ चुके थे और उनके कारण वह इतना टूट चुका था कि तीन सालमें ही मर गया, उसके बाद जो राजा आया उसने वही अत्याचार करने शुरू कर दिये।

मूर्ति और मनुष्य

नगरमें उत्तरकी ओर एक ऊँचेसे स्तम्भपर सुखी राजकुमारकी प्रतिमा स्थापित थी। मूर्तिपर हल्का स्वर्ण-पत्र मढ़ा था, आँखोंके स्थानपर दो चमकदार नीलम थे और तलवारकी मूठमें एक बड़ा-सा लाल जड़ा था।

लोग उस प्रतिमाके सौन्दर्यकी बड़ी प्रशंसा करते थे। एक नगर-समितिका सदस्य, जो अपनेको कलाका पारखी बतलाना चाहता था, कहता था—"यह प्रतिमा इतनी ही सुन्दर है जितना दिशा-सूचक यन्त्र।" फिर इस डरसे कि लोग उसे अयथार्थ पलायनवादी न समझ लें वह फ़ौरन कह देता था—"हाँ, है तो यह कलावस्तु, किन्तु उतनी भी उपयोगी नहीं जितना दिशासूचक यन्त्र।"

एक बुद्धिमती माँ अपने ज़िद्दी बच्चेको समझाती थी "तुम भी राजकुमारकी तरह क्यों नहीं बन जाते? भला उसकी प्रतिमा कभी किसीसे चन्द-खिलौना माँगती है?"

"मुझे खुशी है कि कम-से-कम दुनियामें कोई तो सुखी और शान्त है!" मूर्तिकी ओर देख कर एक निराश मनुष्य कहा करता था।

चर्चमें पढ़नेवाले शिशु छात्र, लाल मख़मली कोट और सफ़ेद धुले हुए रूमाल गलेमें पहनकर आते थे और उसे देखकर कहते थे—"वाह! यह तो देवदूत-सा लगता है।"

"तुम्हें कैसे मालूम कि देवदूत कैसा होता है?" उनके गणित अध्यापक ने पूछा—"तुमने कभी देवदूत देखा है?"

"क्यों नहीं! रोज सपनेमें हमारी शय्याके पास देवदूत खड़े रहते हैं!"

गणित अध्यापक दिलमें कुढ़ गया क्योंकि वह उन लोगोंको बहुत ही नापसन्द करता था जो सपने देखा करते थे।

एक रातको उस शहरके ऊपरसे एक गौरैया उड़ कर गयी। उसके साथी कई सप्ताह पहले दक्षिणकी ओर चले गये थे किन्तु वह पीछे रुक गयी थी क्योंकि वह एक बेंतके कुँजको प्यार करती थी। वह वसन्तके पहले सप्ताहमें मादक पंखोंपर जब एक पीली तितलीके पीछे-पीछे नदीके किनारे उड़ रही थी तो उसने उस बेंतको देखा। वह उसके लम्बे, पतले शरीरसे आकर्षित होकर वहीं उतर गयी और बात करने लगी—

"तुम मुझे प्यार करने दोगे?" गौरैयाने पूछा। बेंतने धीमेसे सिर हिला दिया। वह उसके चारों ओर उड़ने लगी। कभी-कभी उसके पंख जलसे छू जाते थे और चाँदीकी हल्की लहरियाँ मुसकरा देती थीं। यही उसका प्रणय संकेत था और यह सारे मधुमास तक चलता रहा।

"यह बिलकुल बेकारका सम्बन्ध है!" दूसरी गौरैयोंने कहा—"उसके पास न रुपये हैं न अमीर सम्बन्धी!" इसलिए पतझड़ आते-आते अन्य सभी गौरैयाँ उड़ गयीं। यह गौरैया बहुत अकेलापन महसूस करने लगी और इस प्यारसे उसकी तबीयत भी ऊब गई। "यह बोलना तो जानता ही नहीं—और इसमें कोई व्यक्तित्व भी नहीं! हवाके हर झोंकेपर यह झूम उठता है। सच बात तो यह है कि यह बिलकुल घरेलू है और मैं हूँ सदा उड़नेवाली। मेरा इसका क्या साथ?" उसने पूछा—"क्या तुम मेरे साथ आओगे?"

बेंतने सिर हिला दिया।

"ओह, मैं अभी तक प्रेममें मूर्ख बन रही थी!" उसने चीख कर भावुक स्वरमें कहा—"मैं अब दक्षिणमें जा रही हूँ निराश होकर! अच्छा अलविदा!"

दिनभर उड़नेके बाद वह रातको नगरके समीप पहुँची। "मैं ठहरूँ कहाँ?" उसने कहा। "मैं समझ रही थी शहर मेरा स्वागत करेगा!"

इतनेमें उसने स्तम्भासीन मूर्ति देखी।

"वाह! मैं यहीं ठहरूँगी! यह बहुत अच्छा स्थान है यहाँ काफी साफ़ हवा आ रही है।" और वह मूर्तिके पैरोंके पास उतर पड़ी।

उसने चारों ओर देखकर कहा—"मेरा शयनागार सोनेका है।" और वह पंखोंमें मुँह छिपाकर सोने जा रही थी कि एक पानीकी बड़ी-सी बूँद टपसे उसपर गिर पड़ी। "ताज्जुब है" उसने कहा "आकाशमें एक भी बादल नहीं है—तारे साफ चमक रहे हैं—फिर भी पानी बरस रहा है—बेंतको वर्षा पसन्द थी—मगर आह! वह तो बड़ा स्वार्थी था।"

इतनेमें दूसरी बूँद गिरी—"इस प्रतिमासे फ़ायदा क्या अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती।" उसने कहा—"चलो कोई दूसरा आश्रय-स्थान ढूँढें।"

उसने पंख खोले और तीसरी बूँद गिर पड़ी। उसने ऊपर देखा।

राजकुमारकी आँखोंमें आँसू थे और उसके सुनहले गालपर आँसू झलक रहे थे। उसका चेहरा इतना भोला था कि गौरैयाको दया आ गई।

"तुम कौन हो?" उसने पूछा!

"मैं सुखी राजकुमार हूँ!"

"फिर तुम रो क्यों रहे हो!" पंख फड़फड़ाकर गौरैयाने कहा—"तुमने तो मुझे बिल्कुल भिगो दिया!"

"जब मैं जीवित था"—मूर्तिने उत्तर दिया—और मेरे वक्षमें मनुष्यका हृदय धड़कता था तब मेरा आँसुओंसे परिचय नहीं हुआ था। मैं आनन्द-महलमें रहता था जहाँ दुःखको प्रवेश करनेकी इजाज़त नहीं है। दिनमें मैं अपने उद्यानमें विलास करता था और रातको नृत्यमें लगा रहता था। मेरे उद्यानके चारों ओर एक प्राचीर थी किन्तु मेरे चारों ओर इतना सौन्दर्य

था कि मैं [illegible] बाहर [illegible] नहीं किया। मैं [illegible] और मैं मर गया। और अब [illegible] इतनी ऊँचाईपर स्थापित कर दिया है कि मैं नगरकी सारी कुरूपता और दुःखदर्द [illegible] सकता हूँ। [illegible] मगर फिर भी रोता आ रहा है।"

"अच्छा तो राजकुमार ठोस सोनेका नहीं है।" गौरैयाने सोचा—मगर वह इतनी शिष्ट थी कि उसने यह बात जोरसे नहीं कही।

"दूर, बहुत दूर—" मूर्ति अपनी सुरीली आवाजमें कहती रही—"एक गलीमें एक टूटा-फूटा मकान है. उसकी एक खिड़की खुली है—उसके अन्दर एक औरत एक मेजके पास बैठी है। उसका चेहरा दुबला और थका हुआ है और उसके हाथ सुईसे घायल लाल-लाल हैं। वह रानीकी सबसे सुन्दरी अनुचरियोंके कपड़ेपर फूल काढ़ रही है। एक कोनेमें उसका बच्चा बीमार पड़ा है। उसे ज्वर है और वह फल माँग रहा है। गौरैया, नन्ही गौरैया क्या तुम मेरी तलवारकी मूठमें जगमगाता हुआ हीरा निकालकर उसे नहीं दे आओगी—मेरे पैर तो इस स्तम्भमें जड़े हैं और मैं चल नहीं सकता!"

"दक्षिण देशमें लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे नील नदीपर उड़ रहे होंगे। और कमलके फूलोंसे वार्तालाप करनेके बाद राजाओंके मक़बरोंमें सोते होंगे। राजा रंगीन ताबूतमें सो रहा होगा। वह पीले वस्त्रमें लपटा होगा और मसालोंसे उसका अंग लेपन किया गया होगा। उसकी गर्दनमें पुखराजका हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियोंकी तरह होंगे!" गौरैयाने कहा।

"गौरैया! गौरैया! सिर्फ़ आज रातको तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है—उदास भी है!"

"उँह! मुझे बच्चोंसे जरा भी स्नेह नहीं है!" गौरैयाने कहा—"पिछले वसन्तमें दो बच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि

मुझे चोट नहीं लगी, मैं बहुत तेज उड़ती हूँ, किन्तु यह बड़ी ही अपमान-जनक बात है।"

मगर राजकुमार इतना उदास था कि गौरैयाको दया आ गई—"यहाँ बहुत सर्दी पड़ने लगी—लेकिन कोई बात नहीं। मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी!"

"धन्यवाद—नन्ही गौरैया!" राजकुमारने कहा।

गौरैयाने राजकुमारकी तलवारकी मूठसे लाल निकाला और उसे अपनी चोंचमें दाबकर उड़ चली। उड़ते वक्त वह गिरजेघरके शिखरके पाससे गुजरी जहाँ श्वेत संगमरमरसे देवदूतोंकी मूर्तियाँ बनी थी। वह उच्च प्रासादके समीपसे गुजरी और उसने नाचकी आवाज़ सुनी। छज्जे-पर एक सुन्दर किशोरी अपने प्रेमीके कन्धेपर हाथ रक्खे हुए आई!

"आह! तारे कितने सुन्दर हैं, प्रेमकी शक्ति भी कितनी अद्भुत है," उसने भावोन्मेषमें कहा, "मैं समझती हूँ कि अगले नृत्यके लिए मेरे वस्त्र तैयार हो जायेंगे" उसने जवाब दिया। "मैंने उसपर फूल कढ़वानेकी आज्ञा दी है। मगर ये लोग देर कितनी लगाते हैं!"

वह नदीपरसे गुजरी और जहाजके शिखरोंपर लटकते हुए आकाश-दीप देखे। अन्तमें वह उस टूटे-फूटे मकानके समीप पहुँची और भीतर झाँका। बच्चा बुखारके कारण विस्तरपर तड़प रहा था। वह फुदककर भीतर पहुँची और उसने उस स्त्रीके पासकी मेज़पर लाल रख दिया। माँ थककर सो गई थी। वह बच्चेके सिरहाने उड़कर परोंसे हवा करने लगी। "आह कैसा अच्छा लग रहा है!" बच्चेने कहा "अब शायद मैं अच्छा हो रहा हूँ!" और वह सो गया।

गौरैया उड़कर राजकुमारके पास वापस आ गई और उसने उसे सब हाल बताकर कहा—"आश्चर्य है, यद्यपि इतनी ठण्डक है लेकिन मुझे ज़रा भी ठण्डक नहीं लग रही है!"

"इसलिए कि तुमने आज एक भलाई की है" राजकुमारने कहा। गौरैया सोचने लगी और सो गई। सोचनेमें उसे सदा झपकी आ जाती थी।

जब दिन उगा तो वह नदीमें गई और नहायी। "अरे! इन दिनों गौरैया! ताज्जुब है", एक जीवशास्त्रीने कहा जो पुलसे गुज़र रहा था। और उसने स्थानीय समाचार-पत्रके सम्पादकको एक बड़ा लम्बा पत्र लिखा। मगर वह इतना गम्भीर और विद्वत्तापूर्ण था कि किसीकी समझमें नहीं आया, इसलिए लोग उसके उद्धरण रटने लगे।

"अच्छा आज रातको मैं मिस्र देश जाऊँगी!" उसने सोचा। वह आज उमंगसे भरी थी। उसने शहरकी सभी इमारतें घूम डाली, और वह गिरजाघरके शिखरपर बहुत देर तक बैठी रही।

जब चाँद उगा तो वह राजकुमारके पास गई और बोली—"तुम्हें मिस्रमें किसीसे कुछ कहलाना तो नहीं है—मैं अभी-अभी जानेके लिए तैयार हूँ।"

"गौरैया! गौरैया! नन्हीं गौरैया! क्या तुम आज रातको और नहीं ठहर सकती" मूर्तिने कहा—"शहरमें, दूर एक सीली हुई कोठरीमें मुझे एक तरुण कलाकार दीख रहा है। वह अपनी काग़ज़ोंसे लदी मेज़पर झुका है और उसके बग़लमें एक पात्रमें सूखे हुए फूल लगे हैं। उसके बाल भूरे और सुनहले हैं, उसके होंठ अनारके फूलकी तरह लाल हैं, उसकी आँखें बड़ी सपनीली हैं, वह रंगमंचके लिए नया नाटक लिख रहा है, मगर ठण्डके कारण उसकी अँगुलियाँ नहीं चल रही हैं। अंगीठीमें एक भी कोयला नहीं है और भूखसे उसकी आँखोंके सपने टूट रहे हैं।"

"मिस्रमें सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। कल मेरे सब साथी दूसरे प्रपात तक उड़ जायँगे। जहाँ नरकुलकी झाड़ियोंमें दरियाई घोड़े सोते हैं

और संगमूसाकी शिलापर मेम्नानका देवता बैठा है। रातभर वह तारों-की ओर देखता है। किंतु भोरका तारा जब डूबने लगता है तो वह खुशीसे चीख पड़ता है और फिर चुप हो जाता है। दोपहरके समय वहाँ शेर आते हैं, जिनकी आँखें हरे रत्नोंकी तरह चमकती हैं और जिनकी गरजमें प्रपातका स्वर डूब जाता है।"

"लेकिन केवल आज रातके लिए भी तुम न रुकोगी!"

"अच्छा आज मैं और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ!" गौरैयाने पूछा। "शोक! मेरे पास अब कोई दूसरा लाल नहीं है। मेरे पास मेरी आँखें हैं जो पद्मराग मणियोंकी बनी हैं जो हजारों वर्ष पहले भारतसे लाये गये थे। उसे निकालकर उसे दे आओ। वह उसे बेचकर ईंधन और खाना खरीद लेगा।"

"प्यारे राजकुमार" गौरैयाने सिसकते हुए कहा—"यह तो मुझसे नहीं होगा और वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"गौरैया! प्यारी गौरैया!" राजकुमार बोला—"तुम्हें मेरी आज्ञा माननी चाहिए।"

गौरैयाने उसकी आँखका हीरा निकाल लिया और कोठरीकी ओर उड़ चली। एक छेदसे वह अन्दर घुस गई। कलाकार सिर झुकाये बैठा था अतः उसने उसके पखोंकी आवाज नहीं सुनी। जब उसने सिर उठाया तो देखा मुर्झाये हुए फूलोंपर बड़ा-सा पद्मराग रक्खा था।

"ओह, मालूम होता है मेरा मोल लोग आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसकने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर लूँगा!"

गौरैया बन्दरगाहकी ओर जाकर एक जहाजके मस्तूलपर बैठ गई। वहाँ कुछ मजदूर अपने सीनेपर रस्सियाँ बाँधे नावें खींच रहे थे।

जब चाँद उगा तो वह राजकुमारके पास आकर बोली—"मैं तुमसे विदा माँगने आई हूँ!"

“गौरैया, प्यारी गौरैया ! क्या आज रातको और नहीं ठहरोगी ?”

“देखो, अब जाड़ा पड़ने लगा है। मिस्रमें हरे-भरे खजूरके कुञ्जोंपर गर्म धूप छायी होगी। मेरे साथी एक पुराने मन्दिरमें घोंसला बना रहे होंगे। प्यारे राजकुमार, मैं जा रही हूँ मगर मैं तुम्हें भूल नहीं सकती। अगले वसन्तमें जब मैं लौटूंगी तो तुम्हारे लिए एक लाल और एक पद्मराग लेती आऊँगी।”

“नीचे गलीमें”—राजकुमारने कहा—“एक लड़की खड़ी है। उसका सौदा नालीमें गिर गया है और वह रो रही है। यदि वह खाली हाथ घर जायगी तो उसका पिता उसे मारेगा। उसके पैरोंमें जूता नहीं है, उसका सिर नंगा है। मेरी दूसरी आंख निकालकर उसे दे दो तो वह मारसे बच जायगी !”

“कहो तो मैं आज रातभर और रुक जाऊँ मगर मैं तुम्हारी आंख नहीं निकालूँगी। फिर तो तुम बिलकुल ही अन्धे हो जाओगे !”

“गौरैया ! प्यारी गौरैया !” राजकुमारने कहा—“मैं जो कुछ कहता हूँ उसे करो।”

उसने उसकी आँख निकाल ली और रोती हुई लड़कीके हाथमें वह हीरा रख दिया। “वाह कैसा रंगीन कांच है !” लड़कीने कहा और हँसकर घरकी ओर भागी।

गौरैया वापस आई।

“अब तुम अन्धे हो” उसने कहा “इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी।”

“नहीं-नहीं, गौरैया अब तुम मिस्र देशको जाओ।”

“मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगी।” गौरैयाने कहा और उसके पैरोंपर सिर रखकर सो गई।

अगले दिन वह राजकुमारके कन्धोंपर बैठकर भाँति-भाँतिकी कहानियाँ

सुनाने लगी—लाल बगुलेकी कहानी जो नील नदीके किनारे कतारमें खड़े रहते हैं और मौक़ा पाते ही झपटकर सुनहली मछलियाँ चोंचमें दबाकर उड़ जाते हैं, स्फिन्क्सकी मूर्तिकी कहानी जो रेगिस्तानमें रहती है और सर्वज्ञ है, चन्द्रमाकी घाटियोंके राजाकी कहानी जो बड़ेसे संगमरमरकी पूजा करता है, और उस हरे साँपकी कहानी जो डालियोंमें लपटा रहता है और बीस पुरोहित उसे दूध पिलाते हैं।

"प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताईं लेकिन इनसे भी ज्यादा आश्चर्यजनक है मनुष्यका दुःख-दर्द। दुःख से बड़ा कोई रहस्य नहीं। जाओ मेरे नगरको देखकर बताओ वहाँ क्या हो रहा है।"

गौरैया शहरपर उड़ने लगी। अमीर अपने महलोंमें रँगरलियाँ मना रहे थे और ग़रीब हाथ फैलाये भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियोंपर-से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे सूनी निगाहोंसे ज़र्द चेहरे लटकाये हुए देख रहे हैं। एक पुलियाके नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं—"भागो यहाँसे!" चौकीदार बोला और वे बारिशमें भीगते हुए चल दिये।

वह वापस आ गई और उसने राजकुमारको यह सब हाल बताया।

"मैं सोनेसे मढ़ा हूँ" राजकुमार बोला—"इसमेंसे स्वर्णपत्र निकालकर मेरी निर्धन प्रजामें बाँट दो!"

गौरैया एकके बाद दूसरा स्वर्णपत्र निकालकर बाँटती रही, अन्तमें राजकुमार बिलकुल मटमैला और मनहूस दीखने लगा। लेकिन बच्चोंके चेहरेपर गुलाबी किरणें झलक आईं और वे गलियोंमें खेलने लगे।

उसके बाद ओले गिरे और फिर पाला पड़ने लगा। सड़कें चमकदार बरफ़से ढँककर चाँदीकी मालूम होने लगीं। छज्जोंसे बड़े-बड़े बर्फके टुकड़े लटकने लगे। सभी फ़रके ओवर कोट पहनकर निकलने लगे।

बेचारी नन्हीं गौरैया ठण्डसे अकड़ने लगी, लेकिन वह उसे इतना प्यार करती थी कि उसे वह छोड़ नहीं सकती थी। अन्तमें उसे लगा कि

अब उसके दिन क़रीब हैं। अब उसके परोंमें केवल इतनी शक्ति शेष थी कि वह राजकुमारके कन्धों तक एक बार उड़ सकती थी। "अलविदा! राजकुमार" वह बोली—"क्या तुम मुझे अपना हाथ चूमने दोगे?"

'ओहो! बड़ी खुशी हुई सुनकर कि आखिर तुम अब मिस्र देश जानेके लिए तैयार हो।"

"मिस्र नहीं मैं मृत्युके देश जानेकी तैयारी कर रही हूँ!"

और उसने राजकुमारको चूमा और मरकर उसके पैरोंके पास गिर पड़ी।

इसी समय मूर्तिके अन्दरसे कुछ आवाज हुई, जैसे कुछ टूट गया हो। वास्तवमें मूर्तिके अन्दर सीसेका दिल चटख गया था। इस समय पाला ग़ज़बका था।

दूसरे दिन मेयर अन्य सदस्योंके साथ टहल रहा था। जब वे वहाँसे गुज़रे तो मेयरने उसकी ओर देखा और कहा—"कितनी भद्दी लग रही है यह प्रतिमा!"

"हाँ, कितनी भद्दी है!" सदस्योंने कहा जो हमेशा मेयरकी हाँ-में-हाँ मिलाते थे।

"उसकी तलवारसे लाल गिर गया है, उसकी आँखे ग़ायब हैं। और उसका सोना उतर गया है। यह तो बिलकुल पत्थरका भिखारी मालूम देता है!"

"बिलकुल बिलकुल पत्थरका भिखारी!" सदस्योंने कहा।

"लो उसके पैरपर एक चिड़िया भी मरी पड़ी है," मेयरने कहा—"कल घोषणा करवा दो कि यहाँ चिड़ियाँ न मरने पावें।" सदस्योंने फ़ौरन नोट कर लिया।

और उसके बाद उन्होंने मूर्ति हटा ली।

"चूँकि अब वह सुन्दर नहीं अत उसका कोई उपयोग नहीं है!" नगरके एक सुप्रसिद्ध कलाविज्ञने कहा।

उसके बाद उन्होंने मूर्ति भट्टीमें गलायी और कारपोरेशनकी बैठकमें यह प्रश्न उठा कि इसका क्या किया जाय! "यहाँपर एक दूसरी मूर्ति होनी चाहिए," मेयरने कहा—"मैं समझता हूँ, मेरी मूर्ति ठीक रहेगी।"

"नहीं मैं समझता हूँ मेरी!" हरेक सदस्यने कहा—और वे बराबर झगड़ते रहे।

लोहा गलानेके कारखानेमें मिस्त्रीने कहा—"कैसा अचरज है, यह टूटा हुआ सीसेका दिल भट्टीमें पिघल ही नहीं रहा है!"

उसने एक कूड़ेखानेमें उसे फेंक दिया, वहाँ गौरैयाकी लाश भी पड़ी थी।

ईश्वरने अपने देवदूतसे कहा—"मेरे लिए नगरकी दो सबसे मूल्यवान् वस्तुएँ ले आओ।" देवदूत वह सीसेका दिल और गौरैयाकी (लाश) ले आया।

"ठीक, बिलकुल ठीक!" ईश्वरने कहा—"मेरे स्वर्गकी डालोंपर यह गौरैया सदा चहकेगी और मेरे उपवनमें राजकुमार सदा विहार करेगा!"

निःस्वार्थ मित्रता

निःस्वार्थ

...त सुबह तालावके किनारे रहनेवाली छछूँदरने बिल... ...। उसकी मूँछें कड़ी और भूरी थीं और उसकी ...रह थी। इस समय बत्तखके छोटे-छोटे बच्चे ... और उनकी माँ बुड्ढी बत्तख उन्हें यह सिखा रही थी ... सिरके बल खड़ा होना चाहिए।

...तक तुम सिरके बल खड़ा होना नहीं सीखोगे, ...लायक नहीं बन सकोगे।" बत्तख उन्हें ... ...उसे मुद करके दिखला रही थी, किन्तु बच्चे ... ...ध्यान नहीं दे रहे थे क्योंकि वे इतने छोटे थे कि अभी ... नहीं समझते थे।

"...नालायक बच्चे हैं," छछूँदर चिल्लायी "इन्हें तो ..."

"...ओ! अभी तो ये बच्चे हैं! और फिर माँ कभी ... ...है!"

"...! ...भावनाओंसे तो अभी मैं अपरिचित हूँ! ... ...हूँ और रहूँगी भी! यों प्रेम अच्छी चीज है ... ...नी बड़ी चीज होती है!"

"...ठीक है, किन्तु मित्रताका कर्तव्य तुम क्या समझ... ...ने पासके एक नरकुलकी डालपर बैठा हुआ ...।

निःस्वार्थ मित्रता

एक दिन सुबह तालाबके किनारे रहनेवाली छछूँदरने बिलमेंसे अपना सिर निकाला। उसकी मूँछें कड़ी और भूरी थी और उसकी पूँछ काले बारूदकी तरह थी। इस समय बत्तखके छोटे-छोटे बच्चे तालाबमें तैर रहे थे और उनकी माँ बुड्ढी बत्तख उन्हें यह सिखा रही थी कि पानीमें किस तरह सिरके बल खड़ा होना चाहिए।

"जब तक तुम सिरके बल खड़ा होना नही सीखोगे, तब तक तुम ऊँची सोसायटीके लायक नही बन सकोगे।" बत्तख उन्हें समझा रही थी और बार-बार उसे खुद करके दिखला रही थी, किन्तु बच्चे उसकी ओर कुछ भी ध्यान नही दे रहे थे क्योंकि वे इतने छोटे थे कि अभी सोसायटी-का महत्व नहीं समझते थे।

"कैसे नालायक बच्चे है," छछूँदर चिल्लायी "इन्हें तो डुबो देना चाहिए!"

"नही जी! अभी तो ये बच्चे है! और फिर माँ कभी डुबोनेका विचार कर सकती है!"

"आह! माँकी भावनाओंसे तो अभी मैं अपरिचित हूँ! वास्तवमें मैं अभी अविवाहित हूँ और रहूँगी भी! यों प्रेम अच्छी चीज होती है किन्तु मित्रता उससे भी बड़ी चीज होती है!"

"ये तो ठीक है, किन्तु मित्रताका कर्त्तव्य तुम क्या समझती हो!" एक जलपक्षीने पूछा जो पासके एक नरकुलकी डालपर बैठा हुआ यह वार्तालाप सुन रहा था।

"हां, यही मैं भी जानना चाहती हूं!" वतखने कहा और अपने बच्चोंको दिखानेके लिए सिरके बल खड़ी हो गई।

"कैसा पागलपनका सवाल है!" छछूंदरने कहा—"मैं यही चाहता हूं कि मेरा अनन्य मित्र मेरे प्रति अनन्य रहे, और क्या?"

"और तुम उसके बदलेमें क्या करोगे?" छोटे जलपक्षीने पूछा और उतरकर किनारेपर बैठ गया।

"तुम्हारा सवाल मेरी समझमें नहीं आया!" छछूंदरने जवाब दिया।

"अच्छा तो मैं इस विषयपर तुम्हें एक कहानी सुनाऊं।" जल-पक्षीने कहा।

"बहुत दिन हुए एक ईमानदार आदमी था। उसका नाम था हैन्स!"

"ठहरो क्या वह कोई बड़ा आदमी था?" छछूंदरने पूछा।

"नहीं वह बड़ा आदमी नहीं था, वह ईमानदार आदमी था। हां, वह हृदयका बहुत साफ़ था और स्वभावका बड़ा मीठा। वह एक छोटी-सी कुटियामें रहता था और अपनी बगियामें काम करता था। सारे देहातमें कोई इतनी अच्छी बगिया नहीं थी। गेंदा, गुलाब, चम्पा, केतकी, हुस्नेहिना, इश्कपेचां सभी उसके बाग़में मौसम-मौसमपर फुलते थे। कभी बेला, तो कभी रातरानी, कभी हरसिंगार तो कभी जूही—इस तरह हमेशा उसकी बगियामें रूप और सौरभकी लहरें उड़ती रहती थीं।

हैन्सके कई मित्र थे किन्तु उसकी विशेष घनिष्ठता ह्यू मिलरसे थी। मिलर बहुत धनी था किन्तु फिर भी वह हैन्सका इतना घनिष्ठ मित्र था कि कभी वह बिना फल-फूल लिये वहांसे वापस नहीं जाता था। कभी वह झुककर फलोंका एक गुच्छा तोड़ लेता था, तो कभी जेबमें फल तोड़कर भर ले जाता था।

"सच्चे मित्रोंमें कभी स्वार्थका लेश भी नहीं होना चाहिए," मिलर कहा करता था और हैन्सको गर्व था कि उसके मित्रके विचार इतने ऊंचे हैं।

कभी-कभी पड़ोसियोंको इस बातसे आश्चर्य होता था कि धनी मिलर कभी अपने निर्धन मित्रको कुछ भी नहीं देता था, यद्यपि उसके गोदाममें सैंकड़ों बोरे आटा भरा रहता था, उसकी कई मिलें थी और उसके पास बहुत-सी गायें थी। मगर हैन्स कभी इन सब बातोंपर ध्यान नहीं देता था। जब मिलर उससे निःस्वार्थ मित्रताके गुण बखानता था तो हैन्स तन्मय होकर सुना करता था।

हैन्स हमेशा अपनी बगियामें काम करता था। बसन्त, ग्रीष्म और पतझड़में वह बहुत सन्तुष्ट रहता था किन्तु जब जाड़ा आता था और वृक्ष फल-फूल विहीन हो जाते थे तो वह बहुत ही निर्धनतासे दिन बिताता था, क्योंकि कभी-कभी उसे बिना भोजनके भी सो जाना पड़ता था। इस समय उसे अकेलापन भी बहुत अनुभव होता था क्योंकि जाड़ेमें कभी मिलर उससे मिलने नहीं आता था।

"जब तक जाड़ा है तब तक हैंससे मिलने जाना व्यर्थ है," मिलर अपनी पत्नीसे कहा करता था—"जब लोग निर्धन हों तब उन्हें अकेले ही छोड़ देना चाहिए, व्यर्थ जाकर उनसे मिलना उन्हें संकोचमें डालना है। कम-से-कम मेरा तो मित्रताके विषयमें यही विचार है। जब बसन्त आयेगा तब मैं उससे मिलने जाऊँगा। तब वह मुझे फूल उपहारमें देगा और उससे उसके हृदयको कितनी प्रसन्नता होगी! मित्रकी प्रसन्नताका ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है!"

"वास्तवमें तुम अपने मित्रका कितना ध्यान रखते हो!" अंगीठीके पास आरामकुर्सीपर बैठी हुई उसकी पत्नीने कहा—"मैत्री-धर्मके विषयमें राजपुरोहितके विचार भी इतने ऊँचे नहीं होंगे यद्यपि वह तिमंजिले मकानमें रहता है और उसके पास एक हीरेकी अँगूठी है!"

"क्या हमलोग हैंसको यहाँ नहीं बुला सकते!" मिलरके सबसे छोटे लड़केने पूछा—"यदि वह कष्टमें है तो मैं उसे अपने साथ खिलाऊँगा और अपने सफ़ेद खरगोश दिखाऊँगा!"

"तुम कितने वेवकूफ़ लड़के हो!" मिलरने डाँटा—"तुम्हें स्कूल भेजनेसे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। तुम्हें अभी ज़रा भी अक़्ल नहीं आई। अगर हैन्स यहाँ आयेगा और हमारा वैभव देखेगा तो उसे ईर्ष्या होने लगेगी और तुम जानते हो ईर्ष्या कितनी निन्दित भावना है! मैं नहीं चाहता कि मेरे एक-मात्र मित्रका स्वभाव विगड़ जाय। मैं उसका मित्र हूँ और उसका ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है! अगर वह यहाँ आये और मुझसे कुछ आटा उधार माँगे तो भी मैं नहीं दे सकता। आटा दूसरी चीज़ है, मित्रता दूसरी चीज़। दोनों शब्द अलग हैं, दोनोंके अर्थ अलग हैं, दोनोंके हिज्जे अलग हैं! कोई वेवकूफ़ भी यह समझ सकता है!"

"तुम कैसी चतुरतासे बातें करते हो" मिलरकी पत्नीने कहा—"तुम्हारी बातें पादरीके उपदेशसे भी ज़्यादा प्रभावोत्पादक होती है क्योंकि इन्हें सुनते-सुनते जल्दी झपकी आने लगती है।"

"वहुतसे लोग कार्य चतुरतासे कर लेते हैं," मिलरने उत्तर दिया—"किन्तु चतुरतासे सलाम वहुत कम लोग कर पाते हैं जिससे स्पष्ट है कि वात करना अपेक्षाकृत कठिन कला है।" उसने मेज़के पार वैठे हुए अपने छोटे वच्चेकी ओर इतनी क्रोधभरी निगाहसे देखा कि वह रोने लगा!

"क्या यही कहानीका अन्त है?" छछूँदरने पूछा।

"नहीं जी, यह तो अभी आरम्भ है!" जल-पक्षीने कहा।

"ओह, तो तुम अच्छे कथाकार नहीं हो—युगके विलकुल पीछे—साहित्यमें तो हर कहानीकार पहले अन्तका वर्णन करता है. फिर आरम्भ-का विस्तार करता है और अन्तमें मध्यपर लाकर कहानी समाप्त कर देता है। यही यथार्थवादी कला है। कल मैंने स्वयम् एक आलोचकसे ऐसा सुना था जो मोटा चश्मा लगाये हुए घूम रहा था और एक नौजवान लेखकको

यही समझा रहा था। जब कभी वह लेखक कुछ प्रतिवाद करता था तो आलोचक कहता था—"हूँ, अभी कुछ दिन पढ़ो !"

"खैर, तुम अपनी कहानी कहो। मुझे मिलरका चरित्र बड़ा गम्भीर लग रहा है। बड़ा स्वाभाविक भी है। बात यह है कि मैं भी मित्रताके प्रति इतने ही ऊँचे विचार रखती हूँ।"

"अच्छा तो ज्यों ही जाड़ा समाप्त हुआ और बसन्ती फूल अपनी पंखुड़ियाँ फैलाकर धूप खाने लगे मिलरने अपनी पत्नीसे हैन्सके पास जानेका इरादा प्रकट किया।

"ओह तुम कितना ध्यान रखते हो हैन्सका !" उनकी पत्नी बोली—"और देखो वह फूलोंकी डोलची ले जाना मत भूलना !"

और मिलर वहाँ गया।

"नमस्कार हैन्स !" मिलरने कहा।

"नमस्कार !" अपना फावड़ा रोककर हैन्सने कहा और बहुत खुश हुआ।

"कहो जाड़ा कैसा कटा ?" मिलरने पूछा।

"ओह ! तुम सदा मेरी कुशलताका ध्यान रखते हो।" हैन्सने गद्गद स्वरोंमें कहा—"कुछ कष्ट अवश्य था, किन्तु अब तो बसन्त आ गया है और फूल बढ़ रहे हैं !"

"हम लोग कभी-कभी सोचते थे कि तुम कैसे दिन बिता रहे होगे ?" मिलरने कहा।

"सचमुच तुम कितने भावुक हो ! मैं तो सोच रहा था तुम मुझे भूल गये हो !"

"हैन्स ! मुझे कभी-कभी तुम्हारी बातोंपर आश्चर्य होता है—मित्रता कभी भुलाई भी जा सकती है ! यही तो जीवनका रहस्य है ! वाह तुम्हारे फूल कितने प्यारे हैं।"

"हाँ वहुत अच्छे हैं !" हैन्स वोला—"और क़िस्मतसे कितने अधिक फूले हैं ! इस वर्ष मैं इन्हें सेठकी पुत्रीके हाथ वेचूँगा और अपनी वैलगाड़ी वापस ख़रीद लूँगा !"

"वापस ख़रीद लोगे ? क्या तुमने उसे वेच दिया ? कितनी नादानी की तुमने !"

"वात यह है !" हैन्सने कहा "जाड़ेमें मेरे पास एक पाई भी नहीं थी। इसलिए पहले मैंने अपने चाँदीके वटन वेंचे, वादमें अपना कोट वेचा, फिर अपनी चाँदीकी ज़ंजीर वेची और अन्तमें अपनी गाड़ी वेच दी ! मगर अव मैं उन सवको वापस ख़रीद लूँगा !"

"हैन्स !" मिलरने कहा—"मैं तुम्हें अपनी गाड़ी दूँगा। उसका दायाँ हिस्सा ग़ायव है और वायें पहियेके आरे टूटे हुए हैं, फिर भी मैं तुम्हें दे दूँगा। मैं जानता हूँ यह वहुत वड़ा त्याग है और वहुतसे लोग मुझे इस त्यागके लिए मूर्ख भी कहेंगे। मगर मैं सांसारिक लोगोंकी भाँति नहीं हूँ। मैं समझता हूँ सच्चे मित्रोंका कर्त्तव्य त्याग है और फिर अव तो मैंने नई गाड़ी भी ख़रीद ली है। अच्छा है, अव तुम चिन्ता मत करो मैं अपनी गाड़ी तुम्हें दे दूँगा !"

"वास्तवमें यह तुम्हारा कितना वड़ा त्याग है !" हैन्सने आभार स्वीकार करते हुए कहा—"और मैं उसे आसानीसे वना लूँगा। मेरे पास एक वड़ा सा तख़्ता है।"

"तख़्ता !" मिलर वोला—"ओह, मुझे भी तो एक तख़्तेकी ज़रूरत है। मेरे आटागोदामकी छतमें एक छेद हो गया है। अगर वह नहीं वना तो सव अनाज सील जायगा। भाग्यसे तुम्हारे ही पास एक तख़्ता निकल आया। आश्चर्य है। भले कामका परिणाम सदा भला ही होता है। मैंने अपनी गाड़ी तुम्हें दे दी और तुम अपना तख़्ता मुझे दे रहे हो। यह ठीक है कि गाड़ी तख़्तेसे ज़्यादा मोलकी है मगर मित्रतामें इन वातोंका ध्यान

नहीं किया जाता। जभी निकालो तख्ता, तो आज ही मैं अपना गोदाम ठीक कर डालूँ।"

"अवश्य!"—हैन्सने कहा और वह कुटियाके अन्दरसे तख्ता खींच लाया और उसने उसे बाहर डाल दिया।

"ओह! यह बहुत छोटा तख्ता है!" मिलर बोला—"शायद तुम्हारे लिए इसमेंसे बिलकुल न बचे—मगर इसके लिए मैं क्या करूँ। और देखो मैंने तुम्हें गाडी दी है तो तुम मुझे कुछ फूल नहीं दोगे। यह लो! टोकरी खाली न रहे!"

"बिलकुल भर दूँ!" हैन्सने चिन्तित स्वरोंमें पूछा—क्योंकि डोलची बहुत बड़ी थी और वह जानता था कि उसे भर देनेके बाद फिर बेचनेके लिए एक भी फूल नहीं बचेगा, और उसे अपने चाँदीके बटन वापस लेने थे।

"हाँ और क्या!" मिलरने उत्तर दिया "मैंने तुम्हें अपनी गाडी दी है, अगर मैं तुमसे कुछ फूल माँग रहा हूँ तो क्या ज्यादती कर रहा हूँ। हो सकता है मेरा विचार ठीक न हो, मगर मेरी समझमें मित्रता बिलकुल स्वार्थहीन होनी चाहिए।"

"नहीं प्यारे मित्र! तुम्हारी खुशी मेरे लिए बड़ी चीज है, मैं तुम्हें नाखुश करके अपने चाँदीके बटन नहीं लेना चाहता।" और उसने फूल चुन-चुनकर वह डोलची भर दी।

अगले दिन जब वह क्यारियाँ ठीक कर रहा था तब उसे सड़कसे मिलरकी पुकार सुनाई दी। वह काम छोड़ कर भागा और चहारदीवारीपर झुककर झाँकने लगा। मिलर अपनी पीठपर अनाजका एक बड़ा-सा बोरा लादे खड़ा था।

"प्यारे हैन्स!" मिलरने कहा—"जरा इसे बाजार तक पहुँचा दोगे।"

"भाई आज तो माफ करो!" हैन्सने सकुचाते हुए कहा "आज तो मैं

सचमुत वहुत व्यस्त हूँ ! मुझे अपनी सव लतरें चढ़ानी हैं, सव फूलके पौधे सींचने हैं और दूव तराशनी है ।"

"अफ़सोस है !" मिलरने कहा "यह देखते हुए कि मैंने तुम्हें अपनी गाड़ी दी है, तुम्हारा इस प्रकार इन्कार करना शोभा नहीं देता !"

"नहीं भैया, ऐसा ख्याल क्यों करते हो !" हैन्स वोला, वह भागकर टोपी पहनने गया और फिर कन्धोंपर वोरा लादकर चल दिया ।

धूप वहुत कड़ी थी और सड़कपर वालू तप रही थी । छः मील चलनेपर हैन्स वेहद थक गया, लेकिन वह हिम्मत नहीं हारा, चलता ही गया और अन्तमें वाज़ारमें पहुँच गया । कुछ देर तक इन्तजार करनेके वाद उसने खरे दामोंपर विक्री की और जल्दीसे लौट आया ।

जव वह सोने जा रहा था तो उसने मनमें कहा—"आज बड़ा वुरा दिन वीता, मगर मुझे ख़ुशी है मैंने मिलरका दिल नहीं दुखाया, वह मेरा मित्र है और फिर उसने मुझे अपनी गाड़ी दी है ।"

दूसरे दिन तड़के मिलर हैन्ससे रुपये लेने आया, मगर हैन्स इतना थका था कि वह अव भी पलंगपर पड़ा था ।

"सच कहता हूँ" मिलर वोला—"तुम वड़े आलसी मालूम देते हो । मैंने सोचा था गाड़ी मिल जानेपर तुम मेहनतसे काम करोगे ! आलस्य वहुत वड़ा दुर्गुण है ! मैं नहीं चाहता कि मेरा कोई मित्र आलसी वने । माफ़ करना मैं मुँहफट वातें करता हूँ सिर्फ़ यही सोचकर कि तुम्हारी चिन्ता रखना मेरा धर्म है । लल्लो-चप्पो तो कोई भी कर सकता है, मगर सच्चे मित्रका कार्य सदा अपने मित्रको दुर्गुणोंसे वचाना होता है ।"

"मुझे वहुत दुःख है !" हैन्सने आँखें मलते हुए कहा—"मैं वहुत थका था !"

"अच्छा उठो !" मिलरने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—"चलो जरा मुझे गोदामकी छत वनानेमें मदद दो !"

मिलर अपने बागमें जाकर काम करनेके लिए चिन्तित था क्योंकि उसके पौधोंमें दो दिनसे पानी नहीं पड़ा था।

"अगर मैं कहूँ कि मैं व्यस्त हूँ तो इससे तुम्हें ठेस तो नहीं पहुँचेगी!" उसने दबी हुई आवाजमें पूछा।

"ख़ैर तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि मित्रताके ही नाते मैंने तुम्हें अपनी गाड़ी दी है, लेकिन अगर तुम मेरा इतना काम भी नहीं कर सकते तो कोई हर्जा नहीं, मैं खुद कर लूँगा।"

"नहीं-नहीं भला यह कैसे हो सकता है!" हैन्सने कहा—वह फ़ौरन तैयार होकर मिलरके साथ चल दिया।

वहाँ उसने दिन भर काम किया। शामके वक्त मिलर आया।

"हैन्स तुमने वह छेद बन्द कर दिया?" मिलरने पूछा।

"हाँ बिलकुल बन्द हो गया"—हैन्सने सीढ़ीसे उतरकर जवाब दिया।

"आहा!" मिलर बोला—"दुनियामें दूसरोंके लिए कष्ट उठानेसे ज्यादा आनन्द और किसी काममें नहीं आता।"

"मुझे तो सचमुच तुम्हारे विचारोंसे बड़ा सुख मिलता है!" हैन्सने कहा और माथेसे पसीना पोंछकर बोला—"मगर न जाने क्यों मेरे मनमें कभी इतने ऊँचे विचार नहीं आते!"

"कोई बात नहीं, प्रयत्न करते चलो!" मिलरने कहा, "अभी तुम्हें मित्रता क्रियात्मक रूपमें आती है, धीरे-धीरे उसके सिद्धान्त भी समझ लोगे! अच्छा, अब तुम जाकर आराम करो, क्योंकि कल तुम्हें मेरी भेड़ें चराने ले जानी हैं!"

इस तरहसे वह कभी अपने फूलोंकी देख-भाल नहीं कर पाता था क्योंकि उसका मित्र कभी न कभी आकर उसे कोई न कोई काम बता दिया करता था। हैन्स कभी-कभी बहुत परेशान हो जाता था, क्योंकि वह सोचता था कि फूल समझेंगे कि वह उन्हें भूल गया। मगर वह सदा सोचता

था कि मिलर उसका घनिष्ठ मित्र है और फिर वह उसे अपनी गाड़ी देने जा रहा था, और यह कितना बड़ा त्याग था।

इस तरहसे हैन्स दिनभर मिलरके लिए काम करता था और मिलर उसे रोज बहुत लच्छेदार शब्दोंमें मित्रताके सिद्धान्त समझाता था जिन्हें हैन्स एक डायरीमें लिख लेता था और रातको उनपर ध्यानसे मनन करता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि रातको हैन्स अपनी अंगीठीके पास बैठा था। किसीने ज़ोरसे दरवाज़ा खटखटाया। रात तूफ़ानी थी और इतने ज़ोरका अन्धड़ था कि वह समझा हवासे किवाड़ खड़का होगा। मगर दूसरी बार, तीसरी बार किवाड़ खड़के।

"शायद कोई ग़रीब मुसाफ़िर है!" वह दरवाज़ा खोलने चला।

द्वारपर एक हाथमें लालटेन और दूसरेमें एक लाठी लिये मिलर खड़ा था।

"प्यारे हैन्स!" मिलर चिल्लाया—"मैं बहुत दुःखमें हूँ! मेरा लड़का सीढ़ीसे गिर गया और मैं डाक्टरके पास जा रहा हूँ। मगर वह इतनी दूर रहता है और रात इतनी अन्धेरी है कि अगर तुम चले जाओ तो ज्यादा अच्छा हो। तुम जानते हो ऐसे ही अवसरपर तुम अपनी मित्रता दिखा सकते हो!"

"अवश्य मैं अभी जाता हूँ! मगर तुम अपनी लालटेन मुझे दे दो! रात इतनी अन्धेरी है कि मैं किसी खड्डमें न गिर पड़ूँ!"

"मुझे बहुत दुःख है!" मिलर बोला—"मगर यह मेरी नई लालटेन है और अगर इसे कुछ हो गया तो मेरा बड़ा नुक़सान होगा!"

"अच्छा मैं योहीं चला जाऊँगा!"

बहुत भयानक तूफ़ान था। हैन्स राह मुश्किलसे देख पाता था और

उसके पाँव नहीं ठहरते थे। किसी तरह ३ घण्टेमें वह डाक्टरके घरपर पहुँचा और उसने आवाज लगाई।

"कौन है!" डाक्टरने बाहर झाँका।

"मैं हूँ हैन्स, डाक्टर!"

"क्या बात है, हैन्स!"

"मिलरका लड़का सीढ़ीसे गिर गया है। आप अभी चलिए।"

"अच्छा!" डाक्टरने कहा और अपने जूते पहने, लालटेन ली और घोड़ेपर चढ़कर चल दिया। हैन्स उसके पीछे चल पड़ा।

मगर तूफान बढ़ता ही गया, पानी मूसलाधार बरसने लगा और हैन्स अपना रास्ता भूल गया। धीरे-धीरे वह ऊसरकी ओर चला गया जो पथरीला था और वहाँ एक गड्ढेमें डूब गया। दूसरे दिन गड़रियोंको उसकी लाश मिली और वे उसे उठा लाये।

हर एक आदमी हैन्सकी लाशके साथ गये, मिलर भी आया। "मैं उसका सबसे घनिष्ठ मित्र था, इसलिए मुझे सबसे आगे जगह मिलनी चाहिए।" यह कहकर काला कोट पहन कर वह सबसे आगे हो रहा और उसने जेबसे एक रुमाल निकालकर आँखोंपर लगा लिया।

बादमें लौटकर वे सरायमें बैठ गये और इस समय केक खाते हुए लोहारने कहा—"हैन्सकी मृत्यु बड़ी ही दुःखद रही!"

"मुझे तो बेहद दुःख हुआ!" मिलरने कहा—"मैंने उसे अपनी गाड़ी दी थी। वह इस बुरी हालतमें है कि मैं उसे चला नहीं सकता, दूसरे उसे खरीद नहीं सकते। अब मैं क्या करूँ? दुनिया भी कितनी स्वार्थी है?" मिलरने शराब पीते हुए गहरी साँस लेकर कहा।

थोड़ी देर खामोशी रही। छछूंदरने पूछा—"तब फिर?"

"तब क्या? कहानी खतम!" जलपक्षी बोला।

"अरे! तो मिलर बेचारेका क्या हुआ?" छछूंदरने कहा।

"मैं क्या जानूँ ? मिलरसे मुझे क्या मतलब ?"

"छिः, तुममें ज़रा हमदर्दी नहीं बेचारेसे—"

"मिलरसे हमदर्दी—इसके मतलब तुमने कहानीका आदर्श ही नहीं समझा !"

"क्या नहीं समझा ?"

"आदर्श !"

"ओह !" छछूँदर झुझलाकर बोली—"मुझे क्या मालूम कि यह आदर्शवादी कहानी है। मालूम होता तो कभी न सुनती। आलोचकोंकी तरह कहती—छिः तुम पलायनवादी हो—धिक्कार ! और उसने गला फाड़कर कहा "धिक्कार !" और पूँछ झटककर बिलमें घुस गयी।

आवाज़ सुनकर बत्तख दौड़ आयी।

"क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं ! मैंने एक आदर्शवादी कहानी सुनाई थी—छछूँदर झुझला गयी !

"ओह यह बात थी !" बत्तख बोली—"भाई अपनेको खतरेमें डालते ही क्यों हो ! आजकल और आदर्शवादी कहानी ?"

इन्फैण्टाका जन्म-दिन

इन्फैण्टाका जन्म-दिन

इन्फैण्टाका जन्म दिन था। महलके उपवनमें धूप चमक रही थी, और अभी-अभी इन्फैण्टाने अपने जीवनका बारहवाँ वर्ष पूरा किया था।

यद्यपि वह एक असली राजकुमारी थी, और स्पेनकी युवराज्ञी थी, किन्तु अन्य निर्धन बच्चोंकी तरह ही उसकी वर्षगाँठ सालमें केवल एक बार पड़ती थी और इसलिए सारा देश इस बातके लिए व्यग्र रहता था कि इस अवसरपर उसे अधिकसे अधिक सुख पहुँचाया जाय। वास्तवमें वह दिन भी बड़ा खुशनुमा था। सिपाहियोंकी कतारोंकी तरह छीटदार ट्यूलिप खड़े थे और दूधमें लहराते हुए गुलाबोंको देखकर उपेक्षासे कह रहे थे—"देखो न हम भी तो उतने ही शानदार हैं।" स्वर्ण धूलमें सने हुए परों-वाली गुलाबी तितलियाँ एक फूलसे दूसरे फूलपर उड़ रही थीं। छोटे-छोटे कीड़े दरारोंसे निकल धूप ले रहे थे और धूपसे अनार चिटख-चिटखकर अपने खूनी घायल दिल दिखला रहे थे। पीले चकोतरे जो ढेरके ढेर हरि-याले कुंजोंमें लटक रहे थे, उन्होंने भी धूपका रंग चुरा लिया था। मैग-नोलियाकी बड़ी-बड़ी हाथीदाँतकी पाँखुरियोंवाली कलियाँ धीरे-धीरे खिल रही थीं और हवामें मादक सौरभ बिखेर रही थीं।

नन्ही राजकुमारी भी। रविशोंपर टहल रही थी, और प्राचीन मूर्तियों और काई लगे पत्थरोंके पीछे लुकाछिपी खेल रही थी। यों साधारण दिनों तो वह केवल अपनी ही श्रेणीके बच्चोंके साथ खेल सकती थी, किन्तु जन्म-दिनके विशेष अवसरपर राजाने इसकी इजाजत दे दी थी कि राजकुमारी किसी भी बच्चेको बुलाकर उनसे अपना मनोरञ्जन कर सकती थी। इन

दुबले-पतले स्पेनी बच्चोंमें एक अजब सौन्दर्य था—कमर तकके मखमली कोट और फूलदार टोपीवाले लड़के, और हाथमें गाउनका छोर थामे और काले और रूपहले पंखोंसे धूप बचानेवाली लड़कियाँ—इनमें एक अजब सौन्दर्य था। मगर इन्फैण्टा उन सबसे सुन्दरतम थी, उसके वस्त्र भी सुन्दर थे। भूरे साटनका गाउन, फूली हुई बाहें, ज़रीका काम, और कड़े कारसेट पर मोतियोंकी पाँत—गुलाबके गुच्छोंवाली दो नन्हीं मखमली चप्पलें और मोतिया रंगका जालीदार पंखा। चम्पई चेहरेके चारों ओरकी सुनहली अलकोंमें एक सफ़ेद गुलाब खुँसा था।

महलके एक गवाक्षसे उदास राजा देख रहा था। उसके बग़लमें उसका भाई, अरागानका डान पेड्रो था जिससे वह नफ़रत करता था। इन्फैण्टा या तो बच्चोंके साथ खेल रही थी, या अपने साथ रहनेवाली अलबुकर्ककी डचेसके गम्भीर चेहरेपर पंखेमें मुँह छिपाकर हँस रही थी। उसे देखकर राजाको, इन्फैण्टाकी माँ, स्वर्गीय रानीकी याद आ रही थी, जिसकी तरुणाई फ्रांससे आते ही मुर्झा गई थी और जिसने बाग़में लगी अंगूरकी लतरके तीसरी बार फूलनेके पहले ही पलकें मूँद ली थीं। वह उसे इतना प्यार करता था कि उसने रानीको क़ब्रमें भी नहीं गाड़ने दिया था। एक शरणार्थी मूर वैद्यने उसके शवको मसालोंमें लपेट दिया था और उसका शव अब भी काले संगमरमर वाले गिर्जेमें उसी चन्दन-मञ्जूषामें उसी प्रकार रक्खा है जैसे १२ वर्ष पहले उस वसन्तके तूफ़ानी दिनोंमें पुरोहितोंने वहाँ रख दिया था। हर महीनेमें एक बार काला लबादा ओढ़कर राजा वहाँ जाता था और उसके बग़लमें झुककर काँपते हुए स्वरोंमें पुकारता था—"मेरी रानी!" यद्यपि स्पेनमें सामाजिक शिष्टाचारके कारण राजाको भी अपने दुःखपर नियन्त्रण रखना पड़ता था, किन्तु कभी-कभी वह आवेशमें आकर उसके पीले हाथोंको दुःखमें पागल होकर पकड़ लेता और जलते हुए चुम्बनोंसे वह उसके ठंढे शवको जगानेका प्रयत्न था।

आज ऐसा मालूम पड़ता था कि वह वैसे ही रानीको अपने सामने देख रहा है जैसे उसने उसे सबसे पहले फाटेन ब्लूके किलेमें देखा था जब उसकी आयु पन्द्रह वर्षकी थी, और रानी तो और भी छोटी थी। उस समय फ्रासके राजा और पूरे दरबारकी उपस्थितिमें पैपेल नन्दियोंने उन दोनों की सगाई कराई थी। जब वह वहाँसे लौटा था तो उसके हाथमें पीले बालोंका एक गुच्छा था और दो नन्हें होंठोंके चुम्बनकी भीनी-भीनी याद।

सचमुच वह उसे दिलोजानसे प्यार करता था, और कहते हैं कि इसीके पीछे उसने अपने देशको बर्बाद कर डाला था जब कि नई साम्राज्यलिप्सासे पागल इंगलैण्डसे उसमें लड़ाई हो रही थी। कभी उसने रानीको अपनी नजरोंसे नहीं ओझल होने दिया और मालूम होता था कि राजकाज तो वह बिसार ही बैठा है। उसमें कामनाका वह आवेग था कि उसने कभी यह नहीं समझा कि जितना वह रानीको सान्त्वना देनेका यत्न करता है, वह उतनी ही बीमार होती जाती है। वह चाहता था कि वह राजकाज छोड़कर किसी शान्त धार्मिक आश्रममें रहने लगे, किन्तु वह इन्फैंटाको अपने भाईके भरोसे नहीं छोड़ सकता था। उसका भाई बहुत ही दुष्ट और क्रूर था और कहा जाता है कि रानीको उसने दो जहरीले दस्ताने उपहारमें देकर मरवा डाला।

उसका सारा वैवाहिक जीवन अपने समस्त जलते हुए सुखों और मर्म-स्पर्शी दुःखोंको लेकर खतम हो गया था। किन्तु आज बागमें इन्फैंटाको खेलते हुए देखकर उसमें न जाने क्यों फिर वही उमगें जग रही थी। उसकी चालढाल, बातचीत, चेहरा, हँसी, नजरें और आंगिक मुद्राएँ, सबकुछ वैसी ही थी। बच्चोंकी हँसी उसके कानोंमें बेचैनी उड़ेल रही थी। उज्ज्वल और निर्दय धूप उसके दुःख पर व्यंग कर रही थी, और कुछ अजब सी सुगन्धें सुबहके झोंकोंमें मचल रही थी। उसने अपने हाथोंसे अपना चेहरा ढाँप

लिया, और जब इन्फैंटाने ऊपर देखा तो पर्दे पड़ गये थे। और महाराज लौट गये थे।

उसने बड़ी निराश मुद्रा बना ली। आज जन्मदिनको तो राजाको उसके साथ रहना चाहिए। क्या वह उस उदास गिर्जाघरमें तो नहीं गया है जहाँ दिन-रात मोमबत्तियाँ जलती रहती हैं और जहाँ उसे कभी जानेकी इजाज़त नहीं मिलती। सब इतने ख़ुश हैं, धूप खिली है, भला अब भी उदासीका क्या कारण? फिर कठपुतली और नाटककी तो कुछ बात ही नहीं।" वह अब साँड़ोंकी लड़ाई भी न देख सकेगा जिसके लिए इतने दिनोंसे घोषणा हो रही है। इससे अच्छे तो उसके चाचा हैं। वे बाग़में आये और उसे बधाइयाँ दीं। उसने अपना सिर हिलाया और डानपेड्रोका हाथ थामकर बाग़के कोनेमें बने हुए रेशमी मंचकी ओर चल पड़ी। उसके पीछे सब बच्चे चल पड़े, क़दम-से-क़दम मिलाकर, जिनके नाम सबसे लम्बे थे, वे सबसे आगे चल रहे थे।

एक सुन्दर लड़कोंका जलूस उसके स्वागतके लिए आया और टिरा-नुयेवा १४ वर्षके सुन्दर काउण्टने आकर उसको सहारा दिया और मंचपर रक्खे हुए एक हाथी-दाँतके सिंहासनपर बिठा दिया। चारों तरफ़ बच्चे जमा हो गये। वे अपने पंखे चला रहे थे और एक दूसरेके कानमें झुककर बातें कर रहे थे।

साँड़ोंकी लड़ाई वास्तवमें अद्भुत थी। लड़ाई नकली साँड़ोंकी थी, मगर असलीसे भी ज़्यादा मनोहर थी। कुछ लड़के छोटे-छोटे सजे हुए घोड़े पर अपनी मणिजटित तलवारें घुमाते हुए और रेशमी फीते लहराते हुए घूम रहे थे। दूसरे बच्चे अपना लाल कोट पहनकर रस्सीके नज़दीक जाते थे और जब साँड़ उनपर हमला करता था तो वह किलकारी मार कर भागते थे। उस नकली साँड़की हरकतोंसे बच्चोंको इतनी उत्तेजना होती थी कि वे उठ-उठकर शाबाशियाँ दे रहे थे, और रूमाल उछाल रहे थे।

जब कई एक नकली घोड़े घायल होकर मर गये तो लड़ाई बन्द हुई। बादमें टिरानुवेवाका काउण्ट साँडको राजकुमारीके पास पकड़ लाया और इस ज़ोरसे तलवार मारी कि सिर अलग होकर गिर पड़ा और उसमेंसे फ्रेञ्च राजदूतका लड़का मोशिये लारेव हँसता हुआ निकल पड़ा।

तालियोंके शोरके बीचमें अखाड़ा खाली हुआ और मरे हुए नकली घोड़ोंको दो मूर गुलामोंने खींचकर बाहर निकाला। उसके बाद एक छोटा सा तमाशा प्रारम्भ हुआ जिसमें एक फ्रेञ्च बाज़ीगरने डोरेपर चलनेकी कला दिखाई। उसके बाद ही पासमें बने हुए अभिनयगृहमें एक पुराने इटालियन नाटकका अभिनय करनेके लिए कुछ इटालियन कठपुतलियाँ आयीं। उनका अभिनय इतना पूर्ण था, इतना स्वाभाविक था कि इन्फैण्टाकी आँखें भर आईं। कुछ बच्चे तो सचमुच ही रोने लगे और उन्हें मिठाई देकर चुप कराया गया। स्वयम् ग्राड इन्क्विज़िटर इतना प्रभावित हुआ कि उसने डान पेड्रोसे कहा—"आश्चर्य है कि केवल सींक और मोमकी बनी पुतलियाँ भी इतने दुःखकी अनुभूति कर सकती हैं।

उसके बाद एक हबशी बाज़ीगर आया। उसके पास एक बड़ी-सी टोकरी थी जिसपर लाल कपड़ा ढँका था। अपनी पगड़ीमेंसे उसने एक विचित्र लाल तूमड़ी निकाली और बजाने लगा। कुछ क्षणोंमें वह कपड़ा हिलने लगा और दो हरे और सुनहले साँपोंने अपना फन बाहर निकाला। वे तूमड़ीके संगीतकी लयपर इस प्रकार झूम रहे थे जैसे लहरोंमें पौदा झूमता है। बच्चे उनके चितकबरे फन और लपलपाती जीभको देखकर भयभीत हो गये। लेकिन उसके बाद मदारीने बालूमेंसे एक छोटा-सा नारंगीका पेड़ उगा दिया जिसमें सुन्दर श्वेत कलियाँ लगी थीं और फलोंके गुच्छे लटक रहे थे। उसके बाद उसने एक छोटी-सी शाहज़ादीसे उसका पंखा माँगा और उससे एक छोटी-सी नीली चिड़िया बन गई जो चारों

ओर उड़ती रही और चहकती रही। बच्चे ख़ुशीसे किलकारियाँ मारने लगे।

न्यूएस्ट्रा, सेनोरा डे पिलारके गिर्जेघरसे आने वाले बच्चोंने एक छोटा-सा नाच दिखाया जो अद्भुत था। इन्फैण्टाने इस विचित्र नृत्यको कभी नहीं देखा था यद्यपि यह प्रतिवर्ष वसन्तऋतुमें कुमारी मेरीकी मूर्तिके सम्मुख हुआ करता था। वास्तवमें स्पेनके शाही ख़ान्दानका कोई भी व्यक्ति कभी उस गिर्जेमें नहीं जाता था क्योंकि किसी पागल पादरीने आस्ट्रियसके राजकुमारको ज़हर देनेका प्रयत्न किया था। कहा जाता है कि उस पादरी को इंगलैण्डकी साम्राज्ञी एलिज़ाबेथने कुछ घूस दे रक्खी थी। उसने इस "कुमारी मेरीनृत्य" के विषयमें केवल सुनभर रक्खा था। वास्तवमें यह बहुत ही आकर्षक था। बच्चे सफ़ेद मखमलके पुराने ढंगके कोट पहनते थे। उनकी विचित्र तिकोनी टोपियोंमें ज़रीका काम था और शुतुरमुर्ग़के पर लगे हुए थे। उनके साँवले चेहरों और काले बालोंके कारण धूपमें उनकी पोशाकोंकी सफ़ेदी और भी बढ़ जाती थी। बड़ी शान और गम्भीरतासे रंगमंचपर क़दम रख रहे थे, उनके झुकनेमें एक सौन्दर्य था, उनके संकेतोंमें एक विचित्र अभिव्यंजना थी, जिसमें हरएक दर्शक आकर्षित हो रहा था। जब उन्होंने अपना नृत्य बन्द किया तो अपनी पंखदार टोपियाँ उतार कर इन्फैंटाको प्रणाम किया। इन्फैण्टाने बड़ी शिष्टतासे उत्तर दिया और वादा किया कि वह पुरस्कारस्वरूप एक बहुत बड़ी मोमबत्ती उस गिर्जाघरमें भेजेगी।

सुन्दर मिस्रियोंका एक समूह अखाड़ेमें उतरा और दोजानू होकर एक गोल घेरेमें बैठ गया। अपने जंगली सितार बजाकर झूमते हुए उन्होंने अजब स्वप्निल तान छेड़ दी। डानपेड्रोको देखकर उनमेंसे कुछने मुँह बनाया, और कुछ भयभीत हो गये, क्योंकि दो ही दिन पहले डान पेड्रोने दो मिस्रियोंको जादू देनेके अभियोगमें फाँसी दिलवा दी थी। लेकिन इन्फैंटा

को देखकर उन्हें बहुत सान्त्वना मिली। वह पीछे झुककर पंखेकी ओटमें बड़ी-बड़ी नीली आंखोंसे उनकी ओर देख रही थी। उन्हें उसे देखकर यह विश्वास हो गया कि वह किसीके प्रति क्रूर हो ही नहीं सकती। वे बड़ी कोमलतासे सितार बजाते रहे, अपनी लम्बी अंगुलियोंको धीरेसे तारोंको स्पर्श मात्र कर वे धीमे-धीमे झूमने लगे जैसे वे सो गये हों। उसके बाद सहसा वे तीव्र उठे और कूदकर पैरोंसे नाचने लगे। बच्चे चौंक उठे और इन्फैंटाका हाथ अपनी तलवारपर पहुंच गया। वे अपने मृदंग जोरोंसे पीट रहे थे और कोई जंगली प्रेम गीत गा रहे थे। दूसरे संकेतके साथ ही वे फिर ज़मीनपर लेट गये। सब मूक थे। केवल सितारके तारोंकी धीमी झंकार ही सुनाई पड़ रही थी। कई बार ऐसा करनेके बाद वे अदृश्य हो गये। उसके बाद वे एक भूरे रीछको लिये हुए और कन्धोंपर बन्दर बिठाये हुए आते हुए दीख पड़े। रीछ बहुत गम्भीरतासे शीर्षासन कर रहा था। बन्दरोंने भी बहुतसे तमाशे दिखाये। उन्होंने तलवार चलाई, तोपें दागीं और बाक़ायदा क़दममें क़दम मिलाकर मार्च किया। उनका खेल बहुत सफल रहा।

लेकिन सुबहके सब तमाशोंमें बौनेका नाच सबसे आनन्दप्रद रहा। जब वह अपने टेढ़े पैर नचाते और अपना कुरूप चेहरा घुमाते हुए अखाड़ेमें घुसा तो सभी बच्चे ठठाकर हंस पड़े। इन्फैंटा स्वयम् इतनी हंसी कि, कैमरारानें उसे चिताया कि शाही कानूनके अनुसार अपनेसे नीची श्रेणी वालोंके सामने राजकुमारीका इतना हंसना अनुचित है। किन्तु बौना वास्तवमें बहुत ही विचित्र था। स्पेनके राजदर्बारमें जो अपनी कुरूपताकी पसन्दगीके लिए प्रसिद्ध है वहां भी कभी इतनी कुरुप वस्तु देखनेमें नहीं आई। वह केवल एक दिन पहले पकड़ा गया था। दो सामन्त जङ्गलोंमें शिकार खेलने गये थे। वहीं उन्हें डरकर भागता हुआ यह बौना मिला था। वे लोग इन्फैंटाके लिए यह आश्चर्यजनक वस्तु पकड़ लाये थे। बौनेका पिता जो एक लकड़हारा था—ऐसी बेकार और कुरूप सन्तानसे छुटकारा पाकर

बहुत ही प्रसन्न हुआ था। शायद उसके विषयमें सबसे हास्यास्पद बात यह थी कि वह स्वयम् अपनी कुरूपतासे अनजान था। वह बहुत प्रसन्न और उत्साहित मालूम देता था। जब बच्चे हँसते थे तो वह भी उतनी ही स्वच्छन्दता और आनन्दसे हँसता था। हर नाचके बाद वह अजत्र ढंगसे झुककर सलाम करता था, उसी प्रकार हँसता और झूमता था जैसे वह भी उन्हींमेंसे एक हो। वह यह नहीं समझता था कि वह एक कुरूप वस्तु है जो प्रकृतिने दूसरोंके व्यंग सहनेके लिए बनाई है। इन्फैण्टापर तो वह मुग्ध था। वह अपनी निगाहें उसपरसे हटा ही नहीं पाता था और मालूम होता था मानो उसीके लिए नाच रहा हो। इन्फैण्टाको याद था कि शाही खान्दान की महिलाओंने किस प्रकार इटालिन गायकपर फूलके गुच्छे फेंके थे, जिसे मैड्रिडके पोपने राजाकी उदासी दूर करनेको भेजा था। इन्फैण्टाने भी बालोंमें खुँसा हुआ सफ़ेद गुलाब निकाला और कुछ तो हँसीमें और कुछ केमराराको सतानेके लिए अखाड़ेमें बौनेके पास फेंक दिया और बहुत ही मीठे ढंगसे मुसकरा दी। बौनाने उसे बड़ी गम्भीरतासे स्वीकार किया और अपने भद्दे और सूखे ओठोंसे वह गुलाब चूमकर उसे हृदयसे लगाया, कानों तक उसका चेहरा लाल हो गया, उसकी आँखोंमें एक चमक आ गई और उसने एक घुटनेपर झुककर सलाम किया।

इससे तो इन्फैण्टाको इतनी हँसी आई कि बौनेके रंगस्थलसे बाहर भाग जानेके बाद भी वह हँसती रही और अपने चाचासे उसने कहा कि यही नाच फिर कराया जाय। कैमराराने कहा कि धूप बहुत तेज हो गई है और राजकुमारीको महलोंमें लौट चलना चाहिए। वहाँ दावतका प्रबन्ध है और जन्म-दिनकी एक बहुत बड़ी केक बनी है जिसपर उसका नाम लिखा है और ऊपर एक चाँदीकी झण्डी है। वह बहुत शानसे उठी और कहा कि थोड़ी देर बाद बौनेको फिर अपना नाच दिखाना होगा। फिर उसने टिरानुयेवाके काउण्टको इस आकर्षक उत्सवके लिए धन्यवाद दिया और अपने महलमें लौट गई। बच्चे भी जैसे आये थे उसी ढंगसे लौट गये।

जब बौनेने सुना कि उसे फिर इन्फैण्टाके सामने नाचना है और उसी-की इच्छानुसार, तो वह गर्वसे फूलकर बागमें दौड़ने लगा। वह बार-बार उसी गुलाबको चूमता था और अजब तौरसे मुँह बनाता था, खुशीमें भरकर।

बौनेको अपने उद्यानमें घुसनेकी हिम्मत करते हुए देखकर फूल बहुत ही नाराज हुए और जब उन्होंने उसे रविशोंपर टहलते हुए देखा और भद्दे तौरपर हाथ झटकते हुए देखा तो वे चुप नहीं रह सके।

"वह इतना भद्दा है कि किसी स्थानमें भी जहाँ हम लोग हों उसे खेलने नहीं देना चाहिए।" ट्यूलिप चीखकर बोले।

"भगवान् करे वह पोस्तके फूलका रस पीकर हजारों सालकी नींदमें डूब जाय!" लिलीने गुस्सेसे लाल होकर कहा।

"कितना भयानक है वह!" कैक्टसने कहा—"वह कैसे मुड़ा हुआ है। और सर उसका कितना बड़ा है। उसे देखते ही मुझे आग लग जाती है। अगर पास आया तो मैं अपने काँटे चुभो दूँगा।"

"और देखो तो उसके पास मेरा सबसे अच्छा फूल है।" सफेद गुलाबने चीखकर कहा—"मैंने यह फूल आज सुबह इन्फैण्टाको वर्षगाँठके उपलक्ष्यमें दिया था। इसने वहाँसे चुरा लिया"—और उसने जोरसे आवाज दी "चोर! चोर!"

लाल जरेनियमके फूल जो कभी घमण्ड नहीं करते थे क्योंकि उनके बहुतसे सम्बन्धी बहुत ही निर्धन थे, घृणासे मुड़ गये। और जब वायलेटने कहा—"हाँ, वह बेचारा बहुत रूपहीन है, लाचारी है। तो उन्होंने फ़ौरन जवाब दिया यही तो उसका मुख्य दोष है। अगर वह दोष लाइलाज है तो भी सहानुभूति प्रकट करनेकी क्या जरूरत है। सच तो यह है कि कुछ वायलेटकी कलियाँ खुद सोच रही थीं कि उसकी कुरूपता अवश्य है और कहीं अच्छा होता अगर वह गम्भीर या उदास बना रहता, बजाय इसके कि वह इस तरह बाग भरमें उछलता-कूदता फिरता।

पुरानी, धूप-घड़ी जो स्वयम् वहुत ही महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि वह सम्राट् चार्ल्स पंचमको समय वता चुकी थी, वौनेको देखकर इतनी घवड़ा गई कि अपनी सुईसे दो मिनट वजाना भूल गई और वग़लमें धूप खाते हुए श्वेत मयूरसे वोली—"कुछ भी हो, राजाओंके लड़के राजा होते हैं और लकड़हारोंकी सन्तान तो आखिर लकड़हारा ही होगी !" इस वक्तव्यपर मयूरको कोई भी आपत्ति नहीं हुई और इस ज़ोरसे उसने उसका समर्थन किया कि ठंडे जलवाले फव्वारेके हौज़में तैरनेवाली सुनहली मछलियोंने वाहर सिर निकालकर जल-देवताओंकी पत्थरकी मूर्तियोंसे पूछा कि क्या दुनियामें कोई नई वात हो रही है।

किन्तु कुछ भी हो चिड़ियाँ उसे चाहती थीं। उन्होंने उसे नाचती हुई पत्तियोंके साथ परियोंकी तरह गाते हुए सुना था, या उसे शाहवलूतके तने पर वैठकर गिलहरियोंके साथ खेलते खाते हुए देखा था। उन्हें उसकी कुरूपतासे ज़रा भी अरुचि नहीं होती थी। खुद वुलवुल जिसे नारंगीके कुंजोंमें गाते हुए सुनकर चाँद झुक आता था, स्वयम् वहुत सुन्दर नहीं है। फिर वौनेने उनसे सदा दयापूर्ण व्यवहार किया था। उस भयानक शिशिरमें जव पेड़ोंपर एक भी फल नहीं था, ज़मीन लोहेकी तरह सख्त पड़ गई थी और भूखसे व्याकुल भेड़िये शहरके फाटक तक चले आते थे, तव भी वह चिड़ियोंको नहीं भूला था, और अपनी मोटी काली रोटीके टुकड़े उन्हें खिलाया करता था।

वे चिड़ियाँ उसके चारों ओर उड़ रही थीं। पाससे गुज़रते हुए उनके पंख उसके गालोंसे छू जाते थे। वौना इतना खुश था कि उससे उन्हें वह सफ़ेद गुलावका फूल विना दिखाये नहीं रहा गया और उसने यह वता दिया कि वह फूल इन्फैण्टाने खुद उसे दिया था क्योंकि वह उसे प्यार करती थी।

वे उसके कथनका एक शव्द भी नहीं समझ पाती थीं, किन्तु इसकी

उन्हें कुछ परवाह न थी क्योंकि वे एक ओर सिर झुका कर बुद्धिमत्ताका प्रदर्शन कर रही थी और समझदारोंका आडम्बर भर रही थी।

छिपकलियाँ उसको ओर बहुत आकर्षित थी। जब वह दौड़ते-दौड़ते थक गया और घासपर पड़ रहा, तो वे उसके चारों ओर घूमने लगी और उसे खुश करनेका प्रयत्न करने लगी। "हरेक तो छिपकलियोंकी तरह सुन्दर नहीं हो सकता," उन्होंने कहा—"यह तो केवल एक दुराशा है। फिर यद्यपि एक विरोधाभास लगता होगा किन्तु वास्तवमें अगर कोई अपनी आँखें बन्द कर ले और उसकी ओर न देखे तो वह कुरूप है ही नहीं। वास्तवमें छिपकलियाँ स्वभावसे ही दार्शनिक थी और कभी-कभी जब फुरसत होती थी या बाहर पानी बरसता रहता था तो वे घण्टों बैठकर गम्भीर विचार किया करती थी।"

किन्तु फूल उनके और चिड़ियोंके व्यवहारसे बहुत झल्ला गये थे। "इससे यह मालूम होता है," फूलोंने कहा—"कि इस भाग-दौड़से दूसरोंपर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। शरीफ लोग उसी तरह एक जगह स्थिर रहते हैं जैसे हम लोग।" उसके बाद वे अपने मुँह आसमानकी ओर उठा कर घृणाका अभिनय करने लगे। जब बौना घाससे उठा और महलकी ओर जाने लगा तो वे खुशीसे फूल उठे।

"उसे तो अन्दर ही रखना चाहिए। देखो तो उसके पैर कैसे बेडौल हैं।" फूलोंने कहा।

मगर बौना इन सब बातोंसे अनजान था। वह चिड़ियोंको बहुत प्यार करता था और फूलोंको वह बड़ी आश्चर्यजनक वस्तु समझता था और उनसे दुनियामें सबसे ज्यादा प्यार करता था, (हाँ, इन्फैण्टाको छोड़कर!) इन्फैण्टाने उसे सफेद गुलाब दिया था और वह उसे प्यार करती थी। कैसा अच्छा होता अगर वह उसके साथ ही रहता। इन्फैण्टा मुसकराती और वह उसे बहुतसे खेल सिखाता। यद्यपि वह महलोंमें कभी नहीं रहा किन्तु उसे बहुतसे खेल आते थे। नरकुलके पिंजड़ेमें वह फतिंगे फँसाना जानता था।

बाँसोंसे वह इतनी अच्छी बाँसुरी बना लेता था कि उसपर संगीत मोहित हो जाता था। वह हर पक्षीकी आवाज बोल लेता था और कभी भी कोयल या सारसको बुला सकता था। वह जानवरोंकी राह पहचानता था, नर्म-नर्म पदचिह्नोंको देखकर वह खरगोशका रास्ता पहचान सकता था और कुचली हुई पत्तियोंको देख जंगली सुअरकी राह जान लेता था। वह सब तरहके जंगली नाच जानता था—पतझड़की लाल पोशाकवाला ताण्डव नृत्य, नीले सैण्डल पहनकर पकी फसलके अवसरपर नाचा जानेवाला हास्य नृत्य, जाड़ेका बर्फ़ानी नृत्य और वसन्तका कलियोंवाला नृत्य। उसे जंगली कबूतरोंका घोंसला मालूम था। इन्फैण्टा सचमुच जंगलोंमें चल कर बहुत ही खुश होगी। वह उसे अपने ही बिस्तरपर ला देगा और खुद खिड़कीके बाहर खड़े होकर सुबह तक पहरा देगा। सुबह होते ही वह खिड़कीको आहिस्तेसे खोलकर उसे जगायेगा और फिर वे दिन-भर मिलकर नाचेंगे। जंगलमें एकान्त भी तो नहीं लगता। कभी सामने सफ़ेद घोड़े-पर सवार होकर कोई बिशप जंगलसे निकलता है, कभी मृगछालाके वस्त्र पहने और हरे मखमलकी टोपी लगाये हुए शिकारी कलाई-पर बाज बिठालकर निकलते हैं। अंगूरी मौसममें हाथ लाल किये हुए और शराबके पीपे ले जाते हुए कलवार दिखाई पड़ते हैं। रातको लकड़हारे लकड़ियाँ सुलगाकर आँच तापते हैं, आगमें जंगली फल भुन-भुनकर चिट-खते हैं, पासकी गुफाओंसे डाकू निकल आते हैं और उनके साथ मिलकर रंगरलियाँ मनाते हैं। एक बार उसने टोलेडोकी धूल भरी सड़कपर एक लम्बा जलूस घूमते हुए देखा था। आगे-आगे महन्त लोग गाते हुए चल रहे थे, चमकदार झण्डे और सुनहरे क्रास उनके हाथमें थे। उनके पीछे शिर-स्त्राण, जिरह-बख्तर पहने और चाँदीके भाले लिये हुए सैनिक थे जिनके बीचमें तीन व्यक्ति थे जो नंगे पैरों थे, पीला चोग़ा पहने थे जिनपर विचित्र तस्वीरें बनी हुई थीं। वे अपने हाथोंमें तीन जलती हुई मोमबत्तियाँ लिये हुए थे। सचमुच जंगलमें बहुत-सी दर्शनीय वस्तुएँ हैं और फिर भी जब वह

थक जायगी तो वह उसके लिए कोई नम कट्टार ढूँढ लेगा या उसे गोदमें उठाकर ले चलेगा, क्योंकि यद्यपि वह बौना था, किन्तु कमजोर नहीं था। वह उसके लिए लाल फूलोंकी माला गूँथेगा। जब राजकुमारी चाहेगी उसे उतारकर फेंक देगी और वह दूसरी माला गूँथ देगा। वह उसके लिए सुबह शबनमसे भीगे हुए फूल और रातको जुगनू लायेगा जो उसकी श्यामल सुनहली अलकोंमें तारोंकी तरह चमकेंगे।

किन्तु राजकुमारी है कहाँ? उसने श्वेत गुलाबसे पूछा किन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। सारे महलमें सन्नाटा छाया हुआ था जहाँ खिड़कियाँ भी नहीं बन्द थी, वहाँ मोटे पर्दे डालकर रोशनी रोक दी गई थी। वह चारो ओर घूमकर भीतर जानेका कोई रास्ता ढूँढता रहा, अन्तमें उसने एक गुप्त द्वार देखा जो खुला हुआ छूट गया था। वह चुपकेसे भीतर घुस गया और उसने देखा कि वह बड़े शानदार हालमें है। इतना शानदार था वह हाल कि जंगल भी उसके सामने मात था। चारों तरफ खूब चमक थी, और फ़र्शपर भी बहुत सुन्दर रंगीन संगमरमर जड़े हुए थे। मगर इन्फैण्टा वहाँ नहीं थी, केवल कुछ सफ़ेद मूर्तियाँ थी जो अपने जस्तेके सिंहासनोंसे चुपचाप उदास काली आँखोंसे मुसकराते हुए उसकी ओर देख रही थीं।

हालके सिरेपर काले मखमलका जरीदार परदा लटक रहा था। उसपर राजाको प्रिय लगने वाले सूर्य और तारोंके चित्र कढे हुए थे। शायद इन्फैण्टा इसके पीछे छिपी हो?

वह चुपचाप गया और परदा हटा दिया। वहाँ इन्फैण्टा नहीं थी, दूसरा और भी सुन्दर प्रकोष्ठ था, पहलेसे भी ज्यादा सुन्दर। दीवालोंपर कोरियाका बिना हुआ एक शिकारी चित्र वाला पर्दा लटक रहा था, जिसको बनानेमें एक फ्लेमिश कलाकारको सात वर्ष लगे थे। कभी किसी जमानेमें यह ओं ले फूका कमरा था। यह उस पागल राजाका नाम था जिसपर शिकारका भूत इस बुरी तरह सवार रहता था कि वह कभी-कभी सनकमें

कार था। सामनेके एक छोटी-सी चौकीपर पैंजेल्की धार्मिक टोपी रखी थी। सिंहासनके सामनेकी दीवालपर एक चित्र फिलिप द्वितीयका था और दूसरे चित्रमें एक बड़े शिकारी कुत्तेके साथ शिकारी पोशाकमें चार्ल्स पंचम खड़ा था। दोनों खिड़कियोंके बीचमें एक बड़ी-सी आबनूसकी आलमारी थी जिसपर हाथी दाँतसे हालबीनने स्वयम् ताण्डव नृत्यका दृश्य अंकित किया था।

किन्तु बौनेको इन विलास-उपकरणोंमें कुछ भी दिलचस्पी न थी। शामियानेके सारे मोती एक गुलाबके मुकाबिलेमें कुछ नहीं थे और सिंहासन तो एक पांखुरीके बराबर भी नहीं था। वह सभामें जानेके पहले ही इन्फैन्टासे मिलना चाहता था और कहना चाहता था कि नाचके बाद वह उसीके साथ चली चले। यहाँ महलमें हवा भारी और सुस्त पड़ जाती है, किन्तु जङ्गलमें उन्मुक्त पवनके झकोरे उसकी अलकोंसे अठखेलियाँ [illegible]

कि यदि वह इन्फैन्टासे कहेगा, तो वह अवश्य उसके साथ चली चलेगी। जब वह हरे-भरे जङ्गलमें जायगी, तो वह दिन भर उसके लिए नाचेगा। उसके अधरोंपर एक हल्की-सी मुसकान चमक गई और वह दूसरे कमरेमें चला गया।

दूसरा कमरा सबसे ज्यादा आकर्षक था। दीवारोंपर चाँदीके काम वाला, पक्षियोंके चित्र वाला, गुलाब फूलोंसे अंकित दमिश्कका आवरणपट पड़ा था। पलङ्ग और चौकियाँ मीनाकित चाँदीके थे। अंगीठियोंके सामने दो बड़े-बड़े परदे पड़े थे जिनपर पुष्प-बाण लिये हुए अनंग झूल रहे थे और हरे मणियोंका फर्श बहुत दूर तक जाता हुआ मालूम होता था। वह कमरा सूना भी नहीं था। कमरेके दूसरे छोरपर दर्वाजेके नीचे कोई था जो उसकी ओर देख रहा था। उसका हृदय धड़कने लगा, खुशीकी चीख

[illegible]

[illegible] वह भी रुक गया। वह हँस पड़ा और हाथ फैलाकर आगे बढ़ा। [illegible] हाथ उसके हाथोंसे छू गये। वे बर्फ़से ठण्डे थे। वह डर गया। उसने [illegible] पीछे [illegible], मगर बीचमें कोई [illegible] और कड़ी चीज थी। [illegible] चेहरेपर भय था, दानव भी डरा हुआ-सा था। [illegible] उसपर घूँसा ताना। उसने भी [illegible]। [illegible] पीछे हट गया—वह भी पीछे हट गया।

यह क्या है? उसने [illegible] सोचा और अपने चारों ओर देखा। आश्चर्य था। कमरेमें हरेक चीजकी छाया थी। सामनेकी तस्वीर, दूसरे दीवालपर प्रतिबिम्बित थी, पर्देके दरवाजेके ऊपर सोया हुआ मृगछौना दूसरी ओर भी झलक रहा था, और इधरकी अप्सराकी रजत मूर्ति बाहु फैलाये, दूसरी अप्सरासे मिलनेके लिए व्याकुल थी।

उसने जंगलोंमें केवल प्रतिध्वनि सुनी थी। तो क्या यह प्रतिध्वनि है? क्या जैसे वाणीकी प्रतिध्वनि होती है, क्या वैसी ही नजरोंकी भी प्रतिध्वनि होती है। क्या छायाजगत् भी उतना ही यथार्थ हो सकता है जितना पार्थिव जगत्। क्या यह यथार्थकी ही छाया है?

वह घबड़ा गया। उसने अपने सीनेके पाससे इन्फैण्टाका दिया हुआ श्वेत गुलाब निकाला और चूम लिया। छाया दानवके पास भी एक गुलाब